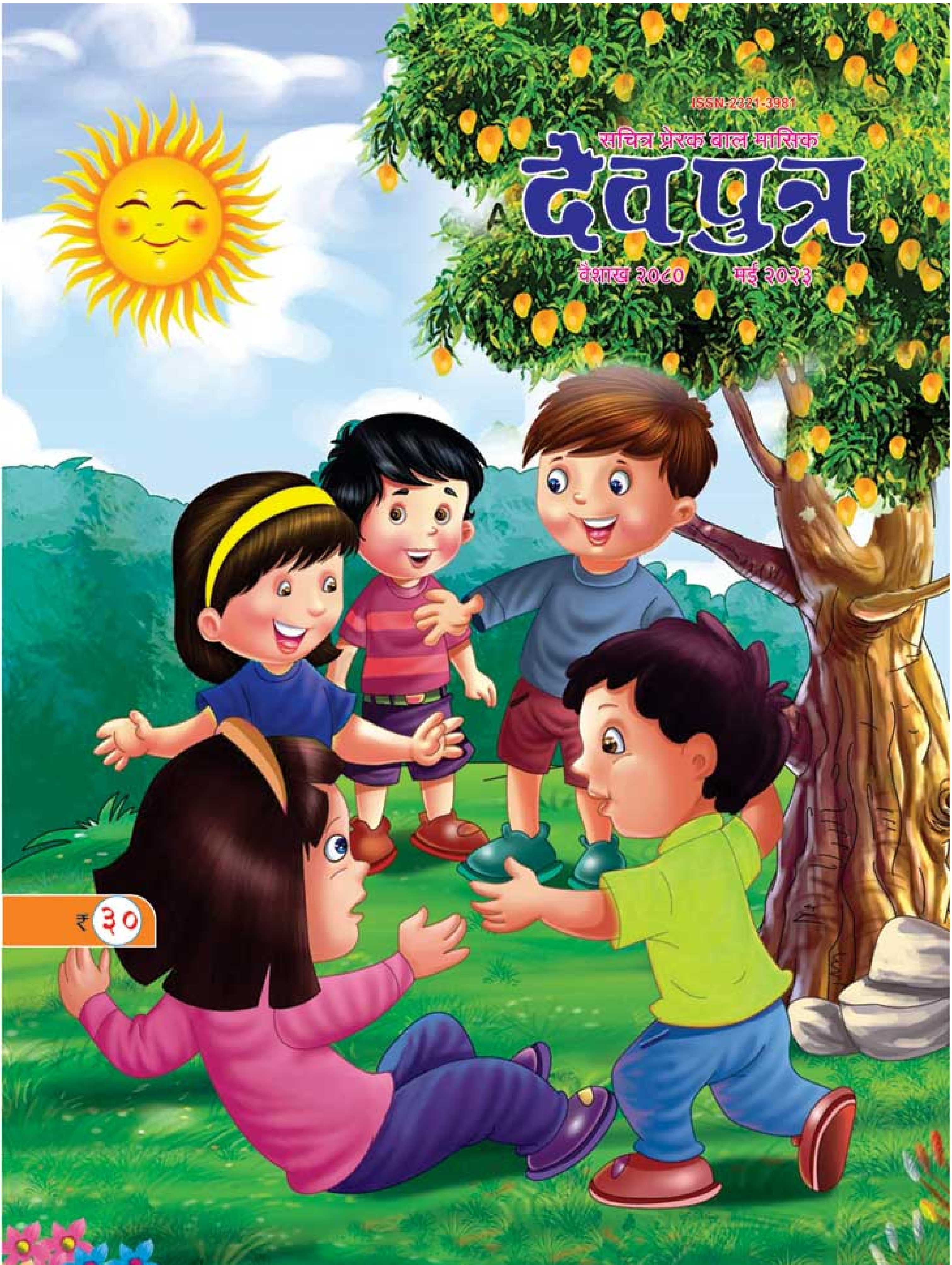
ISSN:2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
वैशाख २०८०
मई २०२३
₹ ३०

सच्चा घर

– भगवती प्रसाद गौतम

बापू, देखो दूर वहाँ जो,
सुंदर भवन खड़ा है।
रंग–ढंग में न्यारा सबसे,
कद में बहुत बड़ा है।

एक धनी परिवार उधर ही,
रहने आया जबसे।
उनका पुत्र प्रभाकर मेरा,
मित्र बना है तबसे।

पर खुद में ही डूबे सब जन,
हुक्म बजाते नौकर।
नौकर भी क्या, बड़े हठीले,
मन–मर्जी के जोकर।

कभी नहीं घर में कुछ फिर भी,
मिलती ताल नहीं है।
कोई कहीं चीखता, कोई
रूठा पड़ा कहीं है।

लगता ऐसी अजब घुटन में,
क्या खाना, क्या पीना।
ऐसे शोर–शराबे में सच,
जीना भी क्या जीना ?

मगर इधर हम अपने घर में,
कितने सुख से रहते।
बापू! खुशी–खुशी जीते सब,
खाते, पीते, हँसते।

काम सभी निपटाते हरदम,
खुद हाथों से अपने।
कर लेते हिल–मिलकर पूरे,
अपने मन के सपने।

खिले–खिले चहरे हैं सबके,
है घर चाहे कच्चा।
मगर प्रेम में रंगा हमारा,
घर ही है घर सच्चा।

– कोटा (राजस्थान)

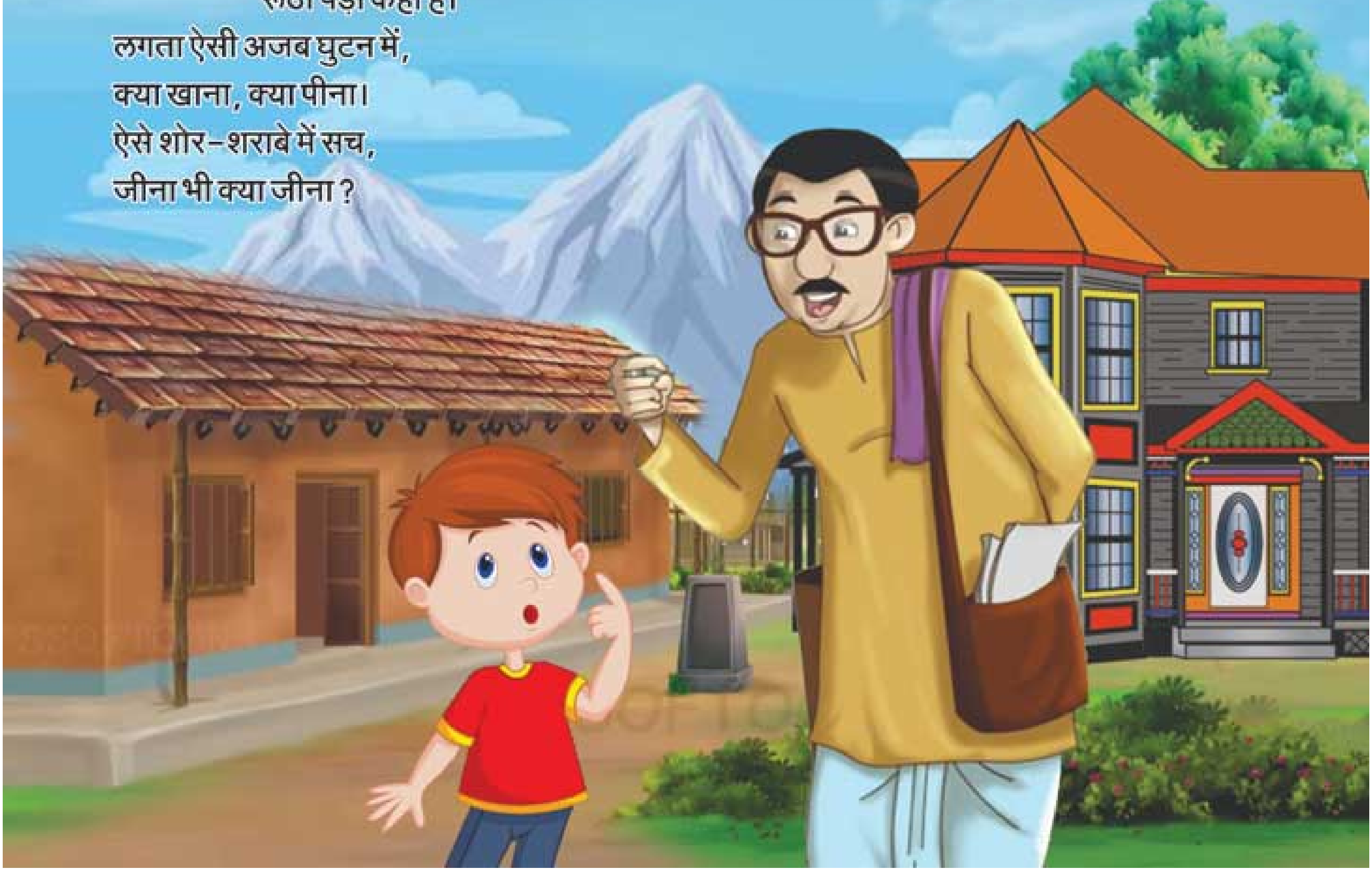

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

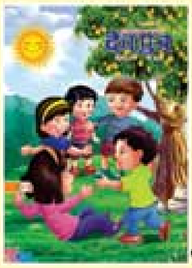

वैशाख	२०८०	■	वर्ष	४३
मई	२०२३	■	अंक	११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

एक छोटी-सी बच्ची थी, बड़ी बुद्धिमान, चंचल, तर्क करने वाली, हर बात को गहराई में जाकर समझने का प्रयत्न करने वाली। क्या? क्यों? कैसे? किसलिए? जैसे शब्दों का तो जैसे उसकी जिव्हा से अटूट रिश्ता था। पिता पढ़े-लिखे नहीं पर गाँव के प्रमुख थे, नीति नियम, परिश्रम से जीवन जीने वाले सरल-मन व्यक्ति। माँ का पढ़ाई-लिखाई से क्या नाता? उस जमाने में महिलाओं को पढ़ने की सुविधा थी ही नहीं पर घर गृहस्थी के काम-काज में लगीं भगवान की पूजा-अर्चना में अटूट विश्वास रखती। भाई अपनी मस्ती में मग्न रहते। लेकिन इस बच्ची को जैसे पूरे गाँव-जगत की चिंता थी। सबकी सहायता को हमेशा तैयार, पढ़ना चाहती थी पर लड़कियों को पढ़ना उस समय के समाज में स्वीकार्य ही न था।

दुर्भाग्य ही था जो ऐसी होनहार बच्ची पढ़ नहीं पा रही थी पर पढ़ाई का केवल पाठशाला में होती है? शाला के द्वार बंद सही पर जीवन की पाठशाला तो घर आँगन, गली, बन, उपवन, खेत, नदी सब कहीं खुली पड़ी थी। वह वहीं सब कुछ बिना पुस्तकों के सीखने का प्रयत्न कर रही थी कि तभी एक सूभेदार ने अपने बेटे के लिए उस दस-बारह वर्ष की बच्ची को वधु के रूप में चुन लिया। गाँव छूट गया। बहुत बड़े राजमहल के एकदम नये और विशेष अनुशासित वातावरण में उसे ऐसा लगने लगा कि गाँव की छोटी चिरैया सोने के पींजरे में बंद हो गई हो।

उसने हिम्मत न हारी, श्वसुर को गुरू बनाया, अनुभवों को शिक्षक, जिज्ञासा को सहेली और अभ्यास को साथी। जीवन में कड़ी परीक्षाएँ सामने आईं। पति की मृत्यु कम आयु में हुई, पुत्र भी चल बसा, श्वसुर दिवंगत हुए अपनों को ही उसकी प्रतिष्ठा खटकती रही पर वह दृढ़ संकल्प से कुशलता पूर्वक महारानी बनी न केवल रानी बल्कि अपनी प्रजा की भलाई करते हुए उनकी माँ, लोकमाता बन गई। शासन चलाया शिव की प्रतिनिधि बनकर। धर्म और परोपकार की सीमा राज्य तक नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र तक फैली। वह अमर हो गईं **लोकमाता पुण्यश्लोका देवी अहिल्याबाई होळकर** बनकर। ३१ मई उनकी जयन्ती है। अवसर है उनके ग्राम कन्या से राजरानी और लोकमाता बनने तक की संघर्ष गाथा से सीख लेने का। सादर नमन लोकमाता।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- एक और एक ग्यारह -मधु गोयल २२

लघु कथा

- संबंधों की ऊष्मा -महेश केशरी ४०

छोटी कहानी

- मुझे आलसी नहीं रहना -इन्द्रजीत कौशिक ०५
- कलाकार -पूनम पांडे २०
- अनोखा जन्मदिन -संदीप पांडे 'शिष्य' ३४
- राजू और गुलाब परी -डॉ. शील कौशिक ४७

संस्मरण

- चितकबरी -वैभव कोठारी २६

एकांकी

- यदि मैं..... -डॉ. पूजा अलापुरिया १४

बाल प्रस्तुति

- बाल रवीन्द्र : सफेद दाढ़ी -कु. निष्णा बनर्जी ०७

आलेख

- राजाराम मोहन राय -कुसुम खरे 'श्रुति' १८
- प्रात: स्मरणीया देवी अहिल्याबाई होळकर -उमेश कुमार नीमा ३६

कविता

- सच्चा घर -भगवती प्रसाद गौतम ०२
- बुद्ध जयन्ती -डॉ.विनोदचंद्र पांडेय 'विनोद' ०६
- बीते कल के रंग -शशि पुरवार २७
- बन्दर मामा -आशीष मोहन ३५
- लोकमाता -श्यामपलट पांडेय ३८
- आइसक्रीम -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ५०

स्तंभ

- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ०८
- शिशु गीत -डॉ. प्रतीक मिश्र ०८
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल १०
- आपकी पाती - १२
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी १३
- छ: अँगुल मुस्कान - २१
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २४
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी २५
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' २८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४२
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ४८
- पुस्तक परिचय - ४९
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

संवाद

- रेलों में एयर ब्रेक प्रणाली -रघुराजसिंह 'कर्मयोगी' ४४

चित्रकथा

- बहुत गर्मी है -देवांशु वत्स ०९
- फास्ट फूड -देवांशु वत्स ३९
- भोला -संकेत गोस्वामी ४३

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स ३५
- वर्ग पहेली -राजेश गुजर ४१
- बच्चो ! नाम बताओ -रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ४६

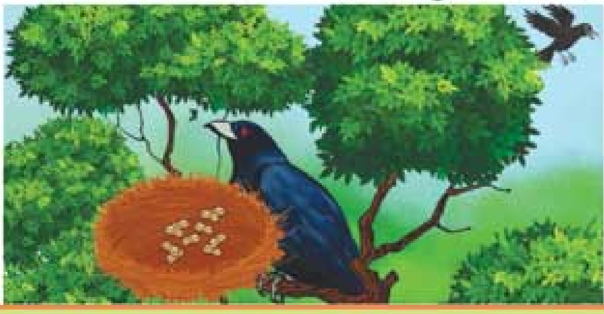

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

मुझे आलसी नहीं रहना

– इंद्रजीत कौशिक

''अरे राजू! तुम आज शाला नहीं गए ?''

''कैसे जाता माँ! सुबह जल्दी नींद खुली ही नहीं।''

अलार्म बजा तो था। पता नहीं इस आलसी लड़के का क्या होगा।

''गृहकार्य हो गया तुम्हारा राजू ?''

''अभी तो पूरा दिन पड़ा है माँ, बाद में कर लूँगा ना।''

''देखो, अपने घर के बगीचे के पौधे कितने सूख गए हैं। जरा उसमें पानी तो डाल दो।''

''ओफ्फो माँ! तुम भी न हर समय मुझे ही टोकती रहती हो। थोड़े दिनों की तो बात है, बारिश हो जाएगी तब पानी मिल ही जाएगा पौधों को।''

राजू और उसकी माँ के बीच ऐसे संवाद प्राय: होते रहते थे। पिताजी के सामने तो वह जाता ही नहीं था। उसे पता था, पिताजी डाँटेंगे।

''राजू बेटा! मैंने जो कविता तुमको याद करने के लिए दी थी तुमने याद कर ली ?''

''आचार्य जी! नहीं की। भूल गया था, कल कर लूँगा।'' कहते हुए राजू ने अपना सिर खुजाया।

'जिसे देखो वही हर समय मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है। यदि कोई काम समय पर नहीं हुआ तो कोई आसमान थोड़े ही टूट कर आ गिरेगा ?' शाला से आते हुए राजू सोच रहा था।

गर्मी का मौसम था और धूप बहुत तेज थी। राजू थोड़ी देर के लिए बगीचे में रुक गया और वहाँ एक पेड़ की छाँव में जाकर लेट गया। इस बीच न जाने कब उसकी आँख लग गई।

''रुको–रुको, तुम भीतर नहीं जा सकते।'' परी ने उसे रोक दिया।

''पर क्यों ? मेरे सारे मित्र तो भीतर हँसी–खुशी से खा–पी रहे हैं। मुझे क्यों रोका जा रहा है ?''

''क्योंकि तुम कोई भी काम समय पर नहीं करते। तुम एक नंबर के आलसी हो आलसी। परी लोक में आलसी लोगों को प्रवेश नहीं मिलता। चलो, अब जाओ यहाँ से।'' कहते हुए परी ने दरवाजा बंद कर लिया।

''मेरे सारे मित्र अंदर उत्सव का आनन्द ले रहे हैं और एक मैं हूँ जो यहाँ बाहर अकेला बैठा हूँ।'' यह सोच कर राजू को रोना आ गया। उसके कानों में अभी भी परी की वह बात गूँज रही थी। ''तुम एक नंबर के आलसी हो आलसी।''

''मैं आलसी बिलकुल नहीं हूँ। मुझे आलसी नहीं रहना। कृपया, मुझे भी मित्रों के साथ शामिल कर लो।'' कहते हुए वह जोर से चिल्लाया।

''तुम आलसी नहीं हो तो इस समय यहाँ बगीचे में क्या कर रहे हो? घर क्यों नहीं जाते? देखो रात हो चली है।'' तभी बगीचे का माली वहाँ आकर राजू से बोला।

राजू हड़बड़ा कर उठ बैठा। सामने न कोई परी थी न कोई उत्सव चल रहा था। अँधेरा हो चला था और वह अकेला ही पेड़ के नीचे सोया हुआ था।

''लगता है, मैं कोई सपना देख रहा था।'' राजू बुदबुदाया।

''बेटा! सपने देखने से कुछ नहीं होगा। अब जाओ और घर जाकर मन लगाकर पढ़ाई करो। तभी जीवन में कुछ बन सकोगे।'' माली ने कहा।

''काका! आप सही कह रहे हो। अपने सपने पूरे करने के लिए मुझे अब आलसी नहीं रहना है।'' राजू फुर्ती के साथ उठ खड़ा हुआ और लंबे-लंबे डग भरता हुआ घर की ओर चल दिया।

- बीकानेर (राजस्थान)

कविता - बुद्ध पूर्णिमा (जयंती) ५ मई

बुद्ध जयन्ती

- विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
लखनऊ (उ. प्र.)

बुद्धदेव! शत-शत प्रणाम है।

**जब अन्याय बढ़ा स्वदेश में,
दुखी हुए जन हर प्रदेश में।
हिंसा होने लगी चतुर्दिक,
लिया जन्म तुमने ललाम है।
बुद्धदेव! शत-शत प्रणाम है।।**

**तुमने दी शिक्षा कल्याणी,
गूँजी दिशा-दिशा में वाणी।
अगणित शिष्य बने अनुयायी,
बुद्ध पंथ का हुआ नाम है।
बुद्धदेव! शत-शत प्रणाम है।।**

**अब भी शुभ-संदेश तुम्हारा,
अब भी प्रिय आदेश तुम्हारा।
मानवता के लिए लाभप्रद,
छाया यश लोकाभिराम है।
बुद्धदेव! शत-शत प्रणाम है।।**

**पन्थ तुम्हारा हम अपनायें,
अपना जीवन सुखी बनायें।
प्रेम, शान्ति के साथ रहे हम,
बन सकता जग स्वर्गधाम है।
बुद्धदेव! शत-शत प्रणाम है।।**

बाल रवीन्द्र : सफेद दाढ़ी

– कु. निष्णा बनर्जी

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को बचपन से ही कविताएँ और कहानियाँ लिखने का शौक था। परन्तु बार–बार लिखने पर भी वे अनुभव करते कि उनकी रचनाओं में बड़ी भारी त्रुटि छिपी पड़ी है। वे अपने से बड़ों के पास जाते, रचनाएँ दिखाते और उन पर राय माँगते। उनकी रचनाओं में त्रुटियाँ तो होती थीं किन्तु देखने वाले इसलिए न बतलाते कि कहीं उनका दिल न टूट जाय।

रवीन्द्र को इससे सन्तोष न हुआ। उन्होंने संकल्प किया कि वे अपनी रचनाओं को स्वयं ही सुधारेंगे पर बाद में यह काम कठिन जान पड़ा। लेकिन उन्होंने साहस न छोड़ा। उन्होंने निश्चय किया कि वे कोई ऐसा साधन अवश्य ढूँढ़ निकालेंगे जिससे उनकी रचनाएँ सब तरह से उत्तम मानी जाएँ।

उन्हीं दिनों कोलकाता में एक विख्यात कवि आये हुए थे। उस समय उनकी कविताओं की बड़ी धूम थी। बालक रवीन्द्र उनसे मिलने कवि–सम्मेलन में गये।

कवि सम्मेलन में सबका ध्यान तो उन कवि महोदय की कविताओं की ओर था पर बालक रवीन्द्र बड़े ध्यान से उनकी उजली सफेद दाढ़ी देख रहे थे। कवि जी की दृष्टि भी कौतुक से उन पर जा टिकती।

कवि–सम्मेलन जब समाप्त हुआ, सब लोग चले गये तब एकान्त पाकर रवीन्द्र ने उन कवि महोदय से रचनाओं को स्वयं ठीक कर लेने का उपाय पूछा। कवि महोदय हँसकर बोले– ''यह तो तभी सम्भव होगा जब तुम मेरे जैसी लम्बी सफेद दाढ़ी रखने लगोगे।''

कवि जी ने तो यह बात हँसी में कही थी पर बालक रवीन्द्र इसे सच मान गये और वे प्रतीक्षा करने लगे कि कब उनके सफेद दाढ़ी निकले और उनकी कृतियाँ सबको प्रिय हो।

साहित्य–रचना करते–करते अनेक वर्ष बीत गये। उनकी रचनात्मक प्रतिभा सूर्य की भाँति चमकने लगी किन्तु रवीन्द्रनाथ को संतोष न हुआ। वे तो उस दिन की बाट जोह रहे थे जिस दिन सफेद दाढ़ी निकलने वाली थी।

रवीन्द्रनाथ दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होते चले गये। चारों ओर उनकी प्रशंसा होने लगी पर गुरुदेव अपनी रचनाओं को त्रुटिपूर्ण मानते रहे क्योंकि उनके चेहरे पर उजली दाढ़ी न थी।

उनका यह विश्वास अनेक वर्षों तक रहा कि मेरी कृतियाँ तभी बढ़िया मानी जाएँगी जिस दिन सफेद दाढ़ी निकलेगी और उनका यह विचार दाढ़ी निकलने के पश्चात् भी न मिटा।

–

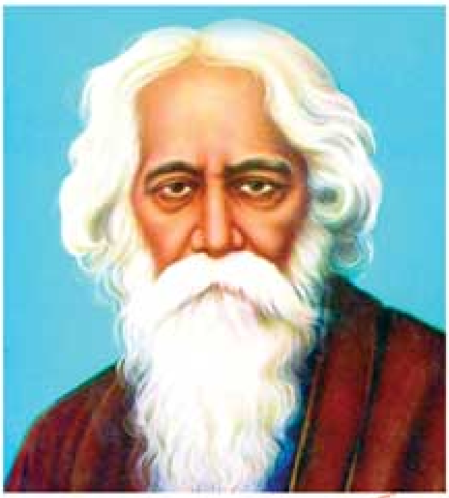

कर्नाटक की राजकीय मछली

कावेरी केन्डई

– डॉ. परशुराम शुक्ल

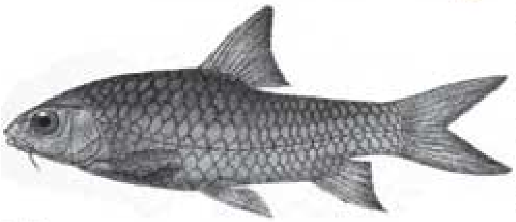

शानदार भारत की मछली,
दक्षिण की कहलाती।
तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक,
में ही पायी जाती।।

रंग रुपहला चाँदी जैसा,
शल्कों वाली काया।
आँखें बड़ी और मुँह छोटा,
बच्चो ! इसने पाया।।

पेड़ों से गिरने वाले फल,
फूल, बेरियाँ खाती।
पूरी शाकाहारी मछली,
सब लोगों को भाती।।

बाढ़ मध्य चढ़ती नदियों में,
आगे बढ़ती जाती।
कंकड़–पत्थर वाले तल में,
अण्डे देकर आती।।

पाँच वर्ष का जीवन लेकिन,
कभी नहीं जी पाती।
भोजन की यह मछली इसके,
पहले मारी जाती।।

– भोपाल (म. प्र.)

कागज की चिड़िया

– डॉ. प्रतीक मिश्र

आफत की पुड़िया,
कागज की चिड़िया।
छू लो तो मुड़ जाए,
रख दो तो गिर जाए।

पानी से डर जाए,
हवा चले उड़ जाए।
छिप जाए खो जाए,
बस्ते में मिल जाए।

बहुत गर्मी है!

चित्रकथा : देवांशु वत्स

हिलने नहीं दिया

– रजनीकांत शुक्ल

दक्षिण भारत का केरल राज्य जहाँ अपने साक्षर नागरिकों के लिए जाना जाता है वहीं अपने हरे–भरे प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ का कोट्टयम जिला राज्य की राजधानी तिरुअनन्त –पुरम् से एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और आसपास के अन्य शहरों से भली प्रकार से जुड़ा हुआ है।

इसी कोट्टयम जिले में पाला या पालई नाम का एक कस्बा है जो मीनाक्षी देवी के नाम पर जानी जाने वाली मीनाचिल नदी के किनारे बसा हुआ है।

इसी कस्बे के निकट अरुनापुरम् नाम का एक गाँव है। जिसमें एक घर व्यापना हाउस नाम का था। जिसमें उस रात उस घर के मालकिन व उनका बेटा आराम की नींद सोए हुए थे।

यह वर्ष १९९९ के जुलाई महीने की चौबीस तारीख थी। तब रात का सन्नाटा चारों ओर फैला हुआ था। पता नहीं क्यों घर की मालकिन की आँख अचानक खुल गई। उन्होंने अंदाजा लगाया कि उस समय रात ही है और सुबह होने में अभी काफी समय बाकी है। पर एक बार आँख खुल गई तो खुल गई दोबारा प्रयत्न करने पर नहीं लग रही थी।

उन्होंने आँखें मूँदकर फिर से एक बार सोने का प्रयत्न किया किन्तु नींद उनकी आँखों से दूर जा चुकी थी। अपने पास सोए पन्द्रह वर्ष के बेटे प्रिंस वी. डौमिनिक की ओर उन्होंने दृष्टि डाली तो वह मजे की नींद में सोया हुआ था। शायद इस तरह नींद आ जाए यह सोचकर उन्होंने करवट बदलकर फिर आँखें बन्द कर लीं।

अभी कुछ ही देर हुई थी कि अचानक उन्हें खिड़की का शीशा टूटने की आवाज सुनाई दी। पहले तो उन्होंने समझा कि उन्होंने नींद में कोई सपना देखा होगा लेकिन नहीं अभी तो उन्हें नींद आई ही कहाँ थी। वे तो आँख बन्द करके उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। यह उनके घर की खिड़की के ही काँच टूटने की आवाज थी।

लेकिन इस समय तो कोई हवा भी नहीं चल रही है और उन्हें खूब याद है कि शाम को उन्होंने खिड़कियाँ अपने हाथों से बंद की थीं। कहीं कोई जानवर तो नहीं घुस आया खिड़की के माध्यम से या फिर... यह सोचकर उन्हें सिहरन हो गई क्योंकि घर में इस समय केवल वे और उनका पन्द्रह वर्ष का बेटा प्रिंस ही घर पर थे।

वे दम साधकर कुछ पल के लिए लेटे, लेटे, होने वाली अगली आहट की प्रतीक्षा करने लगीं। तभी

उन्हें लगा कि कुछ और हलचल हुई। उन्हें अनुभव हुआ कि जैसे उनके घर के साथ वाले कमरे में कोई दबे पाँव चल रहा है। अब उन्हें कोई संदेह नहीं रहा कि उनके घर में होने वाली खिड़की के काँच टूटने की आवाज उनका वहम नहीं सच्चाई थी।

अब उन्हें इस सच्चाई को स्वीकार कर उसका सामना करना था कि उनके घर में किसी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश हो चुका है। इससे पहले कि वह कुछ करे उन्हें घर की एवं अपनी सुरक्षा के लिए कुछ न कुछ करना होगा। पर कैसे ? कुछ ही पल में उनके सामने सिनेमा की रील जैसी घूम गई।

उनकी आशा का दीपक उनका राजकुमार उनका बेटा प्रिंस उनके साथ ही सो रहा था। उन्होंने बहुत ही धीरे से प्रिंस को जगाया और बिना मुँह से एक भी शब्द बोले उसे संकेत में सारी बात समझा दी।

अब बारी उनकी थी। वे दोनों चुपके से अपने बिस्तर से उठे। हथियार के नाम पर जहाँ प्रिंस के पास उसकी हिम्मत थी वहीं उसकी माँ ने बिस्तर के साथ रखी टॉर्च को अपने हाथ में उठा लिया था। अब वे दोनों ही दोनों कमरों के बीच के दरवाजे के पास बिना आहट किए आकर खड़े हो गए। किन्तु उन्होंने कितनी भी सावधानी बरती हो रात के उस सन्नाटे में चोर को तो उनकी आहट लग ही गई थी।

उसने जब घर के लोगों को जगा हुआ अनुभव किया तो वह जहाँ के तहाँ मूर्ति की तरह दम साधकर खड़ा हो गया। इसी बीच प्रिंस की माँ ने टॉर्च का जोरदार प्रकाश उस कमरे के अंदर की ओर कर घुमाया तो उन्हें उसके प्रकाश में एक अनजाना चेहरा दिखाई दिया। एकदम से ठीक चेहरे के ऊपर ही टॉर्च का सारा प्रकाश पड़ने से वह घबरा गया किन्तु फिर एकदम बिना हिले-डुले चुपचाप खड़ा रहा।

उसे लग कि ऐसा करने से शायद वह उन लोगों को धोखा दे पाएगा। किन्तु ऐसा संभव नहीं था। प्रिंस ने अपने मन में कुछ निश्चय कर लिया और जब तक उसकी माँ चोर की आँखों में टॉर्च की रौशनी किए रहीं वही नीचे से अँधेरे में होता हुआ उस चोर के एकदम से बिलकुल पीछे जा पहुँचा। अब उसने इससे पहले कि चोर कोई हरकत कर पाए उसकी कमर को हाथों समेत कसकर पकड़ लिया। चोर जब तक सँभले-सँभले वह प्रिंस के शिकंजे में जकड़ा जा चुका था।

अब उसने स्वयं को लाख छुड़ाने का प्रयत्न किया किन्तु वह प्रिंस की पकड़ से मुक्त न हो सका। उधर उसकी माँ ने जोर-जोर से पड़ोसियों को सहायता के लिए बुलाना शुरू कर दिया। उस समय सुबह के साढ़े तीन बज रहे थे। अचानक रात के सन्नाटे में जब प्रिंस की माँ की आवाज गूँजी तो नींद से उनके पड़ोसी भी जाग गए।

किन्तु वे सब उठें और अपना दरवाजा खोलकर इनके घर तक आ पाएँ। इस बीच काफी

समय था। चोर भी समझ चुका था कि पड़ोसियों के आ जाने पर उसका बच पाना नामुमकिन हो जाएगा। इसलिए उसके पास अभी अवसर है कि किसी न किसी प्रकार प्रिंस की पकड़ से स्वयं को छुड़ाकर भाग सके।

वह इसके लिए जी जान से लगा हुआ था। चूँकि वह प्रिंस की फौलादी पकड़ से स्वयं को बचा पाने में सक्षम नहीं हो पा रहा था इसलिए अब उसने प्रिंस को उस ओर खींचकर ले जाने का प्रयास किया जिधर उसने अपने वे औजार रखे हुए थे जिनके सहारे वह घर के दरवाजे–खिड़कियाँ ताले तोड़ता था। उसका मंतव्य उन औजारों को हथियार के तौर पर उपयोग कर स्वयं को किसी न किसी प्रकार प्रिंस की पकड़ से छुड़वाना था।

किन्तु प्रिंस उस समय अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे हिलने की भी अनुमति नहीं दे रहा था। जिस तरह कोई पहलवान अपने प्रतिद्वंदी को पूरी कोशिशों के बाद भी मैदान में पलटने की अनुमति नहीं देता। प्रिंस ने भी चोर को जमीन पर लिटाकर उसे ऐसे ही फँदे में फँसा रखा था।

अभी चोर इस काट से बचने का कोई उपाय सोच ही पाता इसी बीच पड़ौसी वहाँ आ पहुँचे। बस अब चोर के हाथ बाँधकर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया।

इस तरह नन्हें प्रिंस ने अपने नाम के अनुरूप परिस्थितियों पर अपनी हिम्मत और साहस से एक राजकुमार की तरह ही विजय पाई। उन्हें वर्ष २००० का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमंत्री जी के हाथ से देश की राजधानी दिल्ली में प्रदान किया गया।

नन्हें मित्रो,

रात अँधेरी, साथ न कोई हो संगी साथी,
करो उजाला दीपक बनकर बन जाओ बाती।
पढ़ो–लिखा है जो सवाल, हल करो उसे मन से,
देखो बाहर निकल, समय ने भेजी है पाती।।

– दिल्ली

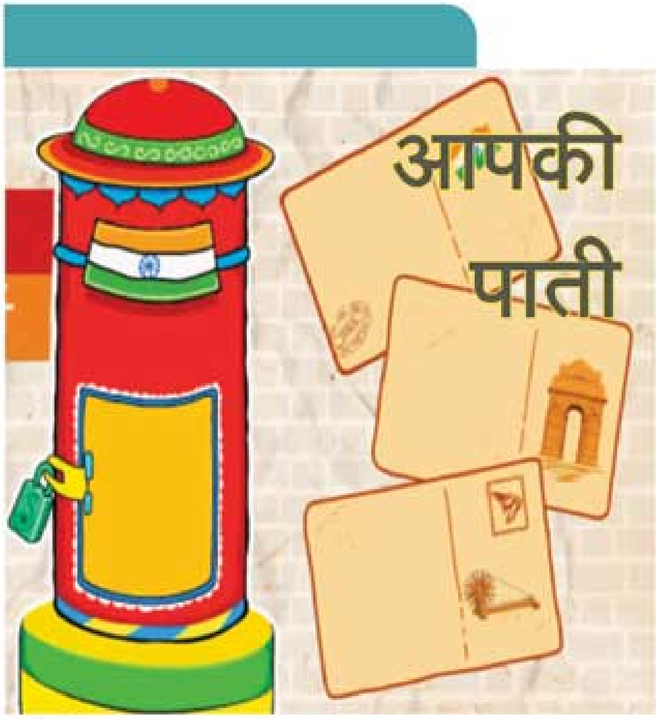

मैं पंजाब से हूँ और देवपुत्र पत्रिका का मैं नया सदस्य बना हूँ। मैं इसे दूसरों को भी लगवाने के लिए विनती करूँगा, क्योंकि यह पत्रिका बहुत ही विशेष है मेरे लिए, क्योंकि इसमें दूसरी पत्रिकाओं की तरह बेमतलब की कहानियाँ नहीं है इसमें जो कहानियाँ है वह बहुत ही सुंदर, सच्ची लगने वाली, सीख देने वाली और बड़े सुंदर ढंग से लिखी और सच में अनुभव की जाने वाली कहानियाँ है जो मुझे बहुत ही प्रिय हैं, मेरी प्रार्थना है कि आने वाले समय में ये पत्रिका और उन्नति करे और देश के सभी बच्चों की सबसे प्रिय पत्रिका बन जाए।

– नवदीप सिंह (पंजाब)

विज्ञान व्यंग

–संकेत गोस्वामी

यदि मैं.....

– डॉ. पूजा अलापुरिया

पात्र

सूत्रधार

हिन्दी शिक्षिका

कक्षा में उपस्थित छात्र

चपरासी

(कक्षा में हिन्दी का कालांश है। शिक्षिका के कक्षा में आने से पूर्व ही सभी छात्र अपनी हिंदी पाठ्य पुस्तक निकाल कर मेज पर रख लेते हैं। कक्षा में शिक्षिका प्रवेश करती है।)

छात्रा– सुप्रभात महोदया!

शिक्षिका– सुप्रभात बच्चो! कैसे हो आप?

छात्र– अच्छे हैं।

शिक्षिका– कल जो गृहकार्य दिया था, क्या सभी ने पूरा कर लिया?

छात्र– (एक स्वर में) जी महोदया!

शिक्षिका– बहुत बढ़िया। बच्चो! हम अपने आसपास बहुत-सी चीजों को देखते हैं। कभी उन्हें अनदेखा कर देते है और कभी उसकी स्मृति हमारे हृदयतल पर सदा के लिए अमिट हो जाती है।

धैर्य– हाँ महोदया! आपने ठीक कहा। कल मैंने आकाश में एक पीली पतंग उड़ती देखी थी। उस पतंग को मैं कभी नहीं भूल सकता।

शिक्षिका– (आश्चर्य से) क्यों?

धैर्य– (आकाश में लहराती पतंग के अंदाज में) मुझे पतंग उड़ाना पसंद है। आकाश में पीली पतंग ऐसे उड़ रही थी, मानों मैं उड़ रहा हूँ।

(सभी छात्र ठहाका मार कर हँसते हैं।)

धैर्य– तुम सब हँसते क्या हो? मैं ठीक ही तो कह रहा हूँ। महोदया जी ने वस्तु की बात कही थी, तो क्या पतंग वस्तु नहीं होती? बोलो? (थोड़ा मुँह बिचकाते हुए।)

शिक्षिका– धैर्य! पतंग वस्तु ही होती है। लेकिन यहाँ हम पतंग की बात नहीं कर रहे हैं।

जयवंती– महोदया! (सम्मान से) जब माँ मुझे बाजार से सुंदर कपड़े, खिलौने और मिठाई नहीं दिलाती है, तो उसकी स्मृति सदा के लिए मेरे हृदयतल में समा जाती है।

(सभी छात्र जयवंती की बात सुनकर हँसने लगते हैं।)

शिक्षिका– जयवंती! आप बैठ जाइए। मैं समझाती हूँ। आप सभी को एक प्रोजेक्ट करना है। उस प्रोजेक्ट का विषय है, ''यदि मैं समाज सेवक होता, तो...''

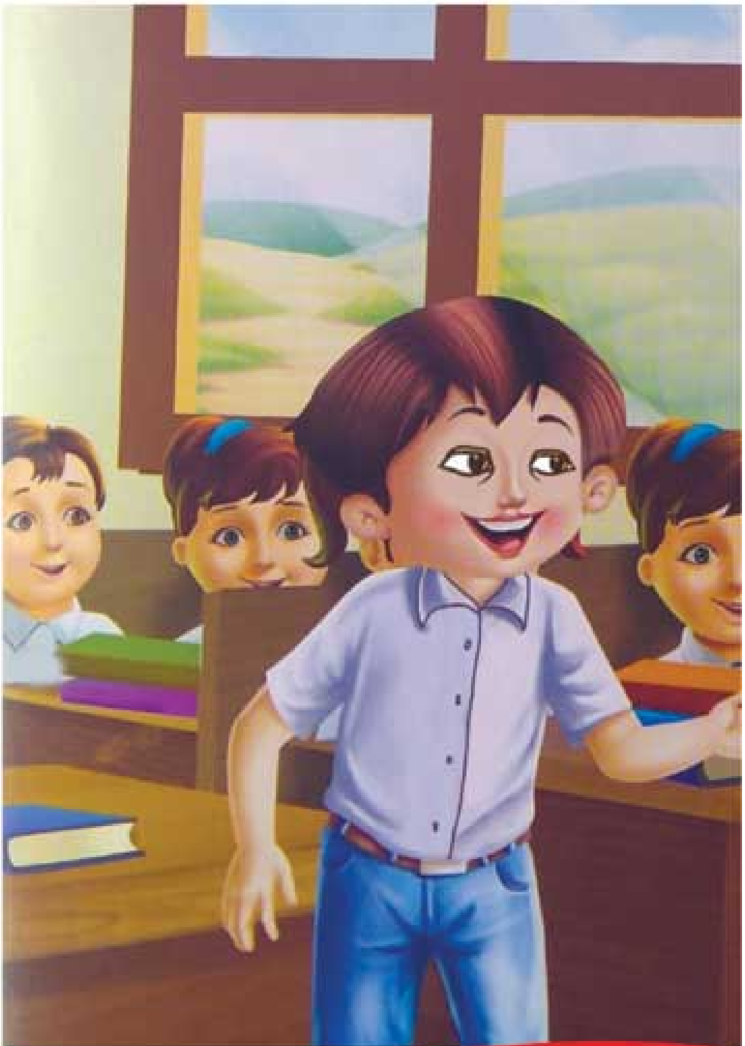

अमोल– महोदया! यह तो कोई वस्तु नहीं है?

शिक्षिका– अमोल! मैं जानती हूँ कि यह कोई वस्तु नहीं है।

पंकज– फिर?

(धानी और कार्तिक आपस में कुछ फुसफुसाते हैं।)

धानी– यह भी कोई प्रोजेक्ट हुआ? यदि मैं.....।

कार्तिक– हर शिक्षक अपनी मर्जी हम पर थोप देते हैं।

धानी– कभी हमसे पूछो हमें क्या लिखना है? क्या बनना है? जिसे देखो....!

कार्तिक– समाज सेवक होता क्या है मैं तो जानता ही नहीं तो कैसे लिखूँ? ''यदि मैं समाज सेवक होता तो...।''

धानी– हमारी तो कई पीढ़ियों में भी कोई समाज सेवक नहीं हुआ। तो कैसे लिखेंगे।?

कार्तिक– मतलब?

धानी– मेरा मतलब है मेरे परिवार में सब डॉक्टर, इंजीनियर और शिक्षक ही हैं।

(पंकज का उत्तर देने से पहले ही शिक्षिका की दृष्टि धानी और कार्तिक की ओर चली जाती है।)

शिक्षिका– धानी और कार्तिक क्या हुआ? कोई परेशानी है क्या?

धानी और कार्तिक एक साथ– (हड़बड़ाते स्वर में) नहीं–नहीं। कुछ नहीं।

शिक्षिका– अच्छा! कार्तिक तुम बताओ कि समाज सेवक कौन होता है?

कार्तिक– (भयभीत स्वर में) महोदया! समाज सेवक... (थोड़ा रुककर) पता नहीं।

शिक्षिका– कोई बात नहीं कार्तिक! कौन बताएगा कि समाज सेवक कौन होता है?

(रिंकू और अन्नू तेजी से अपना हाथ उठाते हैं।)

शिक्षिका– अन्नू! पहले तुम बताओ।

अन्नू– महोदया! समाज सेवक...उं.... उं.... उं.... भूल गया। क्षमा करना।

(सभी छात्र खिलखिलाते हैं।)

रोशन– अन्नू! हाथ तो ऐसे उठाया था जैसे तुम्हें पता ही हो।

शिक्षिका–(रोशन को चुप रहने का संकेत करते हुए) रोशन! रिंकू तुम बताओ।

रिंकू– आमतौर पर देखा जाए तो समाज सेवक वही होते हैं जो लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा अर्थात् सहायता करते हैं। यह सहायता आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि।

शिक्षिका– जैसे?

रिंकू– नि:शुल्क दवाइयाँ, पुस्तकें, कंबल, खाना आदि बाँटना। इतना ही नहीं स्वास्थ्य संबंधित नि:शुल्क शिविर आदि लगाकर भी लोगों की सहायता की जाती है।

शिक्षिका– अरे वाह! रिंकू तुम तो बहुत कुछ जानती हो। कैसे?

रिंकू– मेरे दादाजी और उनके सभी मित्र समाज सेवक संगठन के सदस्य हैं। आए दिन किसी–न–किसी सहायता संबंधित हमारे घर पर बैठक होती है और इससे जुड़ी हर तैयारी में मेरे दादाजी के साथ मेरा पूरा परिवार अपना सहयोग देता है। इससे हमें आत्मिक सुख तो मिलता ही है साथ ही देश और समाज के विकास और उत्थान के लिए कुछ अच्छा कर पाने की प्रेरणा भी मिलती है।

शिक्षिका– बहुत बढ़िया रिंकू! तुम्हारा पूरा परिवार बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है। अपने लिए तो हर कोई जीता है लेकिन देश और समाज के लिए जीने की कला हर किसी के पास नहीं होती। शाबाश रिंकू!

(सभी छात्र रिंकू के लिए तालियाँ बजाते हैं।)

शिक्षिका– किसान, पुलिस, डॉक्टर, शिक्षक, वकील आदि ये सभी समाज सेवक ही हैं। अपने–अपने स्तर पर और अपने तरीके से समाज की सेवा ही तो कर रहे हैं।

लेकिन अब आपके प्रोजेक्ट के लिए पहले यह समझते हैं कि हम समाज सेवक किसे कहते हैं और उसके कार्य क्या होते हैं।

छात्र– जी महोदया!

शिक्षिका– समाज सेवक वे लोग होते हैं जो समाज और जरूरतमंदों के लिए जीते हैं। ये अपना सारा जीवन दान–पुण्य आदि में बिता देते हैं और एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी जाने जाते हैं।

पंकज– महोदया! इनको क्या–क्या करना होता है?

शिक्षिका– पंकज! रुको बता रही हूँ। जैसा अभी रिंकू ने अपने दादाजी और उनके मित्रों के विषय में बताया, ठीक वैसे ही कार्य करने होते हैं जैसे

१) दूसरों के लिए जीना। औरों की सहायता कर सुख की अनुभूति महसूस करना।

२) दूसरों के अधिकारों के लिए लड़ना और उन्हें न्याय दिलवाना।

३) शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधित सहायता करना।

४) गरीबों की आर्थिक सहायता करना। निर्धन व्यक्ति की बेटी के विवाह में आर्थिक सहायता करना।

५) बुजुर्ग, अनाथ बच्चों और महिलाओं के लिए आश्रम आदि की व्यवस्था करना और इनके अधिकारों के लिए आवाज उठाना।

६) सरकार से विशेष नियम या कानून की माँग करना।

७) भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध आवाज उठाना।

८) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के लिए लोगों को जाग्रत करना आदि।

धानी– समाज सेवक में कैसे गुण होने चाहिए?

शिक्षिका– बहुत बढ़िया प्रश्न किया है धानी।

एक कुशल समाज सेवक को दयालु, संवेदनशील, मददगार स्वभाव वाला, उसके अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण, सहनशीलता, धैर्यवान, व्यवहार में विनम्रता और स्वभाव से ईमानदार होना चाहिए उसे बुद्धिमान होना चाहिए क्योंकि कई बार लोग उन्हें बेवकूफ बना जाते हैं।

नेहा– क्या समाज सेवक के लिए किसी तरह की डिग्री अथवा पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है?

शिक्षिका– वैसे तो समाज सेवा के लिए किसी तरह की डिग्री या पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं है।

समाज सेवक में सबसे पहले आंतरिक संकल्प और दूसरों के लिए कुछ करने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए। लेकिन आज विश्वविद्यालयों में सामाजिक कार्य अर्थात् समाजशास्त्र से स्नातक, परास्नातक की डिग्री और अनेक प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इन डिग्रियों के माध्यम से स्वयं की एन.जी.ओ. चलाने अथवा प्रमाणित सामाजिक कार्यकर्ता होने के लिए लाइसेंस बनवाया जा सकता है।

कार्तिक– क्या एक समाज सेवक का कार्य स्थानीय क्षेत्र तक सीमित होता है?

शिक्षिका– बहुत बढ़िया प्रश्न है। अब आप लोग समाज सेवा के विषय में जानने में अपनी रुचि दिखा रहे हैं। तभी इतने उत्तम प्रश्न पूछे जा रहे हैं।

समाज सेवा के कार्य की परिधि सीमित नहीं है। यदि समाज सेवक चाहे तो अपने कार्य की परिधि को जिला स्तर, राज्य स्तर अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक भी कर सकता है। यह उसके सामर्थ्य पर निर्भर करता है।

रोशन– क्या समाज सेवक सोशल मीडिया का सहयोग ले सकता है?

शिक्षिका– हाँ! भूमंडलीकरण के दौर में सोशल मीडिया मुख्य भूमिका निभा रही है। आज सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी बात को विश्व के कोने-कोने में पलक झपकते ही पहुँचा सकते हैं। यू ट्यूब, ट्विटर, फेसबुक, स्काइप आदि के माध्यम से अपनी बात को समाज तक पहुँचाना सबसे सस्ता और आसान माध्यम है।

प्रणव– एक समाज सेवक के पास क्या इतना पैसा होता है कि वह सबकी सहायता कर सके?

शिक्षिका– यदि समाज सेवक आर्थिक रूप से सशक्त है तो वह स्वयं के बल पर सभी कार्य सम्पन्न कर सकता है। किन्तु इसके विपरीत आर्थिक अभाव होने पर समाज सेवक को धन का एकत्रीकरण स्वयं करना होता है। कभी-कभी बड़ी कंपनियाँ, बड़े व्यवसायी, सरकार, स्थानीय लोग, निजी संस्थाएँ आदि भी समाज सेवक को उसके सराहनीय कार्य के लिए आर्थिक सहायता करती हैं।

अलंकार– महोदया! इनके परिवार का भरण-पोषण कैसे होता है?

शिक्षिका– एक समाज सेवक के लिए उसका राष्ट्र ही उसका परिवार होता है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात संपूर्ण धरती एक परिवार की संकल्पना पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। बाबा आमटे, सिंधु ताई सपकाल, निर्मला जोशी, उषा मेहता आदि जैसे समाज सेवकों के अनेक उदाहरण हम सभी के समक्ष हैं। जिनसे हम भली-भाँति परिचित हैं।

धानी तुम कार्तिक से कह रहे थे कि तुम्हारी तो कई पुश्तों में भी कोई समाज सेवक नहीं हुआ। अब तुम स्वयं बताओ जब तुम्हारे परिवार में सब डॉक्टर, इंजीनियर और शिक्षक ही हैं तो.... ?

कार्तिक अब तुम समझ गए कि 'कौन होता है समाज सेवक?'

धानी– हमारी गलती के लिए क्षमा कीजिए।

कार्तिक– हमें इस विषय की इतनी जानकारी नहीं थी। लेकिन अब तो एकदम सरल और सहज हो गया है यह विषय 'यदि मैं समाज सेवक होता तो...।'

इस विषय पर स्वयं के विचार लिखना संभव ही नहीं बल्कि बहुत आसान हो गया है।

छात्र– धन्यवाद महोदया!

(भृत्य घंटी बजाता है। शिक्षिका कक्षा से बाहर जाती है। एक भीनी-भीनी और सौम्य मुस्कान बिखेरते हुए समाप्त होता है हिंदी का कालांश)

(मंच पर पर्दा गिरता है।)

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

आलेख - जयंती २२ मई

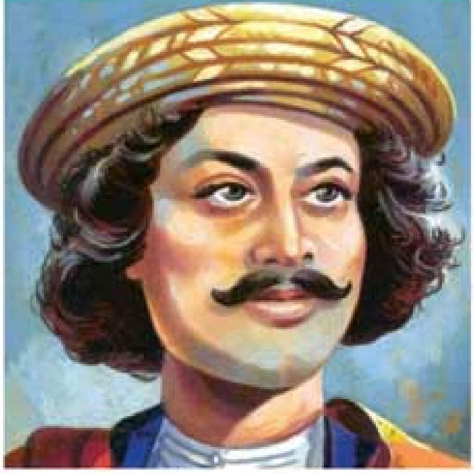

राजा राममोहन राय

– कुसुम खरे 'श्रुति'

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहले, भारत वर्ष की स्थिति कठिन और परकीय मार्ग पर चल रही थी। विदेशियों के आक्रमणों से आक्रांत होकर सदियों तक कष्ट सहे। आठ सौ वर्ष तक मुगलों ने राज किया। भारत को दरिद्रता एवं अज्ञान के कुएँ में ढकेला जा रहा था।

व्यापार करने आये अंग्रेजों ने भारत को मुट्ठी में दबोच लिया। भारतीय संस्कृति खो गई थी। तब बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में, राधा नगर देहात में, एक सनातनी धनाढ्य ब्राह्मण श्री रमाकान्त राय के यहाँ २२ मई १७७२ को एक बालक ने जन्म लिया था। उसका नाम रखा गया 'राममोहन'।

विष्णु भगवान और भागवत पुराण पर अपार श्रद्धा थी बचपन से राममोहन के हृदय में। एक बार वाल्मीकि रामायण का पूरा पाठ करने के बाद ही भोजन करने का प्रण करके पढ़ने बैठे। जब पाठ पूर्ण हुआ तो उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी माँ ने भी भोजन नहीं किया है। तब माँ के प्रति प्रेम और श्रद्धा से उनका हृदय भर गया। १४ वर्ष की आयु में उन्हें वैराग्य हुआ और संन्यासी बनने का मन करने लगा। किन्तु उनकी माँ ने उन्हें रोका और कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया।

मुगल शासन काल में शासकीय भाषा फारसी थी। देहात के विद्यालय में अरबी-फारसी तथा संस्कृत पढ़ा कर पिता ने उन्हें पटना भेज दिया उच्च शिक्षा के लिये। राममोहन ने वहाँ पढ़ते हुए ही, यूनान में सैकड़ों वर्ष पूर्व हुए- 'आरिस्टाटल', 'युक्लीड' नामक दो विचारकों को पढ़ा और सोचने की गहन शक्ति का जागरण हुआ।

उन्हें आश्चर्य होता कि ईश्वर का कोई आकार कैसे हो सकता था? इसी बात से असहमत होकर राममोहन ने घर छोड़ दिया। बालक भटकता हुआ संन्यासियों के साथ हिमालय की तराई, तिब्बत में घूमा। बौद्धवाद के तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया। धर्म गुरुओं की नाराजी के कारण उन्हें मारने की योजना बनने लगी तब वहाँ की महिलाओं ने ममता-दया वश बालक राममोहन को बचाकर भारत भेजने की चतुराई की। पुत्र को वापस पाकर पिता ने उनका ब्याह कर दिया।

राममोहन बनारस चले गये। वहाँ वेद उपनिषद, भारतीय तत्व ज्ञान का गहन अध्ययन किया। सादा जीवन उच्च विचार की अनुभूति हुई। वर्ष १८०९ से १८१४ तक राममोहन राय ईस्ट इण्डिया कंपनी के रेवेन्यु विभाग में, जॉन डिग्वी अंग्रेज अधिकारी के सहायक रहे।

राममोहन राय ने भारत को उपलब्धियाँ देकर 'आधुनिक भारत' की नींव रखी थी इसी कारण उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। ऊँचे कद के छः फुट लम्बे, सुन्दर तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी राममोहन ऊँचे पद पर ऊँचा वेतन पाकर भी वे सुख चैन से नहीं बैठ सके। जॉन डिग्वी और उनके साथियों से घुल-मिलकर अँग्रेजी संभाषण सीखा। जैन विद्वानों से जैन ग्रन्थों का अध्ययन किया। इस्लामी विद्वानों से सूफीवाद का ज्ञान प्राप्त किया। विश्राम का समय भी नई विधायें सीखने व समाज कार्य करने में लगा देते।

राममोहन राय ने १८१४ में त्यागपत्र दे दिया। फिर प्रारंभ किया आधुनिक भारत की नींव रखना।

२०० वर्ष पूर्व शालाओं में मात्र संस्कृत तथा फारसी पढ़ाई जाती थी।

अँग्रेजी, गणित, विज्ञान न सीखने के कारण भारतीय पाश्चात्य विज्ञान नहीं पढ़ पाते थे। उन्होंने अपनी निजी संपत्ति बेचकर, अँग्रेजी विज्ञान आदि सीखने के लिये एक महाविद्यालय की स्थापना की। वे कहते थे– **''सत्य की व ज्ञान की बात यदि बालक भी कहता है तो स्वीकार कर लेना चाहिए।''** ग्रन्थों का ज्ञान और समय के अनुकूल क्या है, यह जानना अनिवार्य है। हिन्दुत्व में उनकी श्रद्धा थी। उन्होंने अँग्रेजी शासन में भी देशहित में कई अद्वितीय कार्य शासन से मनवाये थे जैसे– बाल विवाह कुप्रथा है।

स्त्री शिक्षा एवं उसका संपत्ति पर अधिकार आवश्यक है। वे पुरुष की भाँति स्वातंत्र्य की अधिकारी है। राममोहन उस समय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित किया।

वे कहते – **''हजारों लोगों को, अनेक बातें समझाना उनकी भाषा में ही संभव है। शासन को पसंद नहीं आएगा तो क्या सत्य को भी कुचल दिया जायेगा? यह अनुचित है। सत्य को प्रकाशित करने का अधिकार होना चाहिये। सती प्रथा बंद होना चाहिये।''**

उच्च न्यायालयों में भी भारतीयों को 'ज्यूरी' बनाया जाये। उन्होंने 'ब्राह्मो सभा' नामक संगठन बनाया जिसमें अँग्रेजी, इस्लामी, ईसाई आदि सभी वर्ग के लोग थे। वे कहते– ''ईश्वर केवल एक है। उसका कोई अंत नहीं। सभी जीवित वस्तुओं में उसका अस्तित्व है।'' यही संदेश ब्राह्मो सभा का विश्वास था। विश्व बंधुत्व की कल्पना, उस समय की थी। मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने दिल्ली में राममोहन की कीर्ति सुनी। अपनी पेंशन बढ़वाने के लिये, इंग्लैण्ड में अर्जी भेजने के लिये अकबर द्वितीय ने राममोहन को भेजना उचित समझा। उन्होंने भेजने का खर्चा दिया एवं 'राजा' की उपाधि प्रदान की। इंग्लैण्ड में राजा राममोहन का लिव्हरपुल पर उतरते ही प्रमुख नागरिकों ने भव्य स्वागत किया। पार्लियामेंट में निर्णय हुआ कि मुगल बादशाह की वार्षिक पेंशन रकम ३ लाख किये जा सकते हैं।

सती प्रथा को बंद करने की स्वीकृति दी जाती है। इंग्लैण्ड में ही राजा राममोहन राय गंभीर रूप से बीमार हो गये। प्रसिद्ध डॉक्टरों ने उनका उपचार किया। परन्तु सुधार नहीं हो सका।

२७ सितंबर १८३३ में राजा राममोहन राय परलोक सिधारे गये इंग्लैण्ड में ब्रिस्टल के बाहरी हिस्से में अर्निजव्हेल नामक श्मशान भूमि में उनकी अंतिम क्रिया की गई। उनकी समाधि पर भारतीय तरीके से स्मारक वर्ष १८४३ में बनवाया गया था। आज से लगभग १७४–१७५ वर्ष पहले इस आधुनिक भारत की नींव रखने वाले युग पुरुष को उनकी जन्म तिथि पर शत् श्रद्धा प्रणाम।

– दमोह (म. प्र.)

कलाकार

– पूनम पाण्डे

''अंजन! ये सब क्या है बेटे ये क्या कर रहे हो?'' माँ ने अंजन को स्टोर रूम में कुछ काम करते हुए देखा तो टोका। ''माँ! कुछ विशेष नहीं, मैं तो बस कुछ काम की चीजें देख रहा था।'' ''अच्छा बेटे! मैंने यह मान लिया कि आज रविवार है। पर दोपहर में हम सबको सरदाना काका के घर उत्सव में जाना है।''

''माँ! मैं वहाँ बहुत बोर होता हूँ वैसे भी बारहवीं की पढ़ाई है आप यदि मुझे क्षमा कर दो तो मैं नहीं आना चाहता।'' अंजन ने अपनी अनिच्छा प्रकट की।

''ठीक है जैसी तुम्हारी इच्छा।'' कहकर माँ अपने काम में लग गई। अंजन ने वहाँ कबाड़ से कुछ सामान लिया और चट से पास ही राघव काका को दे आया। ''अरे, वाह बेटे, अंजन! ये तो मेरे बहुत काम आयेगा। मैं इसे मिट्टी का चूल्हा बनाने में उपयोग करूँगा। मुझे ये मजबूत टिन का आधार चाहिए था। तुमने तो मुझे बेकार ही दौड़–धूप से बचा लिया।'' राघव काका ने चैन की सांस लेकर कहा।

''ठीक है काका! आपका काम हो गया मैं चलता हूँ।'' ''अरे, नहीं बेटा! ऐसे नहीं ये ले जाओ।'' ''अरे वाह! मिट्टी की कढ़ाई।'' अंजन उस कढ़ाई को हाथ में लेकर देखने लगा, ''हाँ बेटा! आप इसे माँ को देना। इसमें पकी दाल बहुत ही स्वादिष्ट होती है।'' ''अच्छा! तो इसके कितने पैसे हुए?'' ''अरे! कुछ भी नहीं बेटे! ये मेरी ओर से।'' ''अच्छा पुनः धन्यवाद।''

ऐसा कहकर अंजन वहाँ से लौटकर सीधा घर आया। अंजन ने कढ़ाई लाकर रसोईघर में रख दी। जब संध्या को माँ–पिताजी लौटकर आये तो माँ की दृष्टि इस नई कढ़ाई पर जा टिकी। ''अरे! ये इतनी सुंदर कढ़ाई। ये कहाँ से लाये अंजन?'' माँ ने पूछा।

''ये काका ने दी है, राघव काका ने।'' ''आपको पता है न मैं सुबह–सुबह स्टोर से कबाड़ खोज रहा था।'' ''हाँ! पर तुमको उस कबाड़ के बदले काका ने धन्यवाद देते हुए यह कढ़ाई भेंट में दी है।'' ''अच्छा, पर अंजन! तुम इन बातों से दूर ही रहो। समझे तुम अपने पढ़ने–लिखने में ध्यान दिया करो। बाकि बातों में इतना दिमाग मत लगाया करो।'' माँ–पिताजी दोनों ने ही उसे टोक दिया।

''पर माँ! यह तो कितने अच्छे आइडिया (विचार) की बात की थी है ना अंजन भैया ने।'' छोटे अमन ने अपने भाई की प्रशंसा करते हुए कहा।

''अमन! अभी तो तुम सातवीं कक्षा में हो बेटा! तुम इन सब चीजों को नहीं जानते हो। तुम दोनों अभी बस विद्यालय की पढ़ाई करो।'' वे दोनों समझ गये कि अभी बहस करनी नहीं है तो बस। ''अच्छा! माँ–पिताजी।'' कहकर वे दोनों अपने पढ़ाई के कमरे में चले गये। समय पंख लगाकर उड़ता रहा। अमन की बारहवीं की परीक्षा हो चुकी थी। अमन और अंजन यों ही टहलने गये थे। तभी वे क्या देखते हैं कि नगर निगम

की कचरे की गाड़ी से उछलकर कुछ रंगीन कागज सड़क पर गिर गये हैं।

''अरे, अरे, आपका सामान।'' कहकर अंजन भागता हुआ गया पर गाड़ी आगे निकल चुकी थी। उन्होंने वे रंगीन कागज समेटकर किनारे पर रख दिये। ''अरे! ये देखो अमन! इन सबमें तो कीमती मोती और स्टीकर और सितारे लगे हैं। पर ये तो कचरे की गाड़ी से नीचे गिरे हैं। हाँ अवश्य आसपास कोई शादी–विवाह हुआ होगा और यह सजावट में लगाया होगा।'' ''ओह, अच्छा अंजन भैया।'' अमन उसकी बात सुनकर बोला। ''क्यों न हम यह सब राघव काका को दे दें। वे आजकल पुराने कपड़े की कठपुतली बना रहे हैं।'' ''अच्छा! अंजन भैया पर ये तो बहुत सारे कागज हैं।'' ''तो कोई बात नहीं अमन हम दोनों इसे एक थैले में भर देते हैं।''

अब वे दोनों यह सब कागज राघव काका को दे आये। ''अरे! वाह बच्चो! यह तो खजाना है खजाना। तुमने एक बार फिर मेरा काम आसान कर दिया है।'' ''वाह! वाह!'' कहते हुए राघव काका बहुत प्रसन्न थे। कुछ दिनों बाद राघव काका की बनाई हुई कठपुतली बाजार में बिकने आ गई। राघव काका ने अमन और अंजन को भी एक–एक कठपुतली उपहार में दी।

अमन और अंजन के माता–पिता हैरत में थे कि उनके बच्चे पढ़ाई तो करते ही हैं साथ ही औरों की सहायता भी करते हैं। उनके घर की दीवार पर लटकी कठपुतली से दीवार में रौनक जो भर गई थी।

– अजमेर (राजस्थान)

छः अँगुल मुस्कान

यात्रा के दौरान प्रयागराज स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी तो विश्वास का मित्र उससे मुलाकात करने हेतु पहुँचा। उसे फूल उपहार में दिये। फूल पाकर विश्वास ने कहा बहुत सुंदर फूल हैं।

उसके मित्र ने तपाक से कहा, अभी तो इसमें और भी सुन्दर फूल लगाने थे, तभी बागीचे का माली वहाँ आ गया।

*****

एक सहेली दूसरे से–इंताजार की घड़ी बड़ी लम्बी होती है।

दूसरी सहेली– घड़ियों की अनेक कंपनी है। जब इंतजार की घड़ी तुझे पसंद नहीं है तो कोई दूसरी कंपनी की घड़ी खरीद क्यों नहीं लेती।

*****

माँ– गोलू, इस टोकरी में तीन आम थे, अब एक ही कैसे रह गया?

गोलू– माँ, अँधेरा होने के कारण मैं तीसरा आम देख नहीं पाया।

*****

एक महिला ब्यूटी पार्लर में गयी। ब्यूटीशियन से पूछा– ''सुना है ग्राहक लाने वाले को आप कमीशन देते हैं?''

ब्यूटीशियन– ''हाँ दिया जाता है। ग्राहक कहाँ है?''

महिला– ''वह मैं ही हूँ।''

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२२ परिणाम

१) खुशबू राजपूत, महोली (उ. प्र.)	१५००/–
२) मनिका भारद्वाज, मथुरा (उ. प्र.)	११००/–
३) आशुतोष पयासी, शहडोल (म. प्र.)	१०००/–
४) अनुभव चतुर्वेदी 'अनुभव', मथुरा (उ. प्र.)	५००/–
५) हर्षिका कुमारी, तरणीडीह (झारखंड)	५००/–

एक और एक ग्यारह

– मधु गोयल

प्रखर को आज अपने घर वापस जाना था। नानी से मिलने उसके घर आया हुआ था। कुछ समय बाद ही दादी लेने आने वाली थी। लेकिन वह अनुभव कर रहा था, कि नानी को कोई परेशानी है। बार-बार उसकी दृष्टि नानी पर जाकर अटक जाती, वह उठा नानी के पास गया और कहा, ''क्या बात है नानी?''

''कुछ नहीं बेटा! ऐसे ही जरा माथा भारी लग रहा है, लेकिन तुम तनाव मत लो बेटा, आओ मेरे पास बैठो।'' प्रखर ने छूकर देखा, नानी का बदन तप रहा है, और कहा, ''लगता है आपको तेज बुखार है नानी!''

''नहीं बेटा! मैं ठीक हूँ, मेरी चिंता मत करो, बुढ़ापे का शरीर है।''

''नहीं नानी! आपको बुखार है, मैं आपको ऐसे कैसे छोड़ सकता हूँ।'' प्रखर बोल ही रहा था, तभी नानी अचेत हो जाती हैं।

प्रखर घबरा गया, किसी अनहोनी के डर से रसोई बनाने वाली बाई को आवाज लगाते हुए- ''ताई! इधर आना, क्या आप किसी डॉक्टर को जानती हो?''

''क्या हुआ बाबा?''

''नानी को तेज बुखार है।''

''ओह! कुछ सोचते हुए- ''हाँ है न, पड़ौस वाले डॉक्टर वर्मा जी, उनका नम्बर टेबल पर रखी डायरी में लिखा है।''

प्रखर ने डायरी में फोन नम्बर देख, पड़ौसी डॉक्टर काका को फोन लगाया।

''राम राम डॉक्टर काका! मैं प्रखर बोल रहा हूँ।''

''हाँ-हाँ, बोलो बेटा! सब ठीक तो है?''

''काका! नानी की तबियत ठीक नहीं है, उन्हें बुखार है, क्या आप उन्हें देखने आ सकते हैं?''

''हाँ-हाँ बेटा! मैं अभी आया।''

कुछ देर बाद डॉक्टर आ जाते हैं, प्रखर के बताने पर, नानी का परीक्षण करते हैं और कहते हैं- ''माँ जी! घबराने की कोई बात नहीं, बुखार की तेजी के कारण से ऐसा हुआ है, मैं एक इंजेक्शन लगा देता हूँ, उससे आपको थोड़ी देर में ही आराम हो जाएगा, इसके अलावा और कोई परेशानी हो तो बताइये।''

''नहीं डॉक्टर साहब! और कोई परेशानी नहीं।''

''अच्छा, मैं कुछ दवाइयाँ दे रहा हूँ प्रखर बेटा! माँ जी को दवाइयाँ मेरे बताए अनुसार दे देना, और हाँ फिर भी कोई परेशानी हो तो फोन करना।'' तभी दरवाजे की घंटी बजती है, दरवाजा खोलने पर प्रखर सामने दादी को देखता है और दादी से चिपट कर सारी बातें बताता है।

अंदर आने पर दादी डॉक्टर साहब से पूछती है– ''कोई चिंता की बात तो नहीं ?''

डॉक्टर ने कहा– ''माँ जी! बहुत समझदार पोता है आपका।''

''हाँ डॉक्टर साहब! समझदारी तो समय ने सिखा दी।''

''छोटी सी आयु में ही माँ–पिता जी का साया सिर से उठ गया।''

डॉक्टर– ''बराबर है। मैं समझ सकता हूँ।''

जाते–जाते प्रखर का गाल थपथपाते हुए। ''चिंता मत करो।''

''धन्यवाद काका!'' कुछ समय बाद प्रखर ने पूछा– ''अब कैसी हो नानी ?''

''बेटा, मैं काफी ठीक अनुभव कर रही हूँ।''

''कुछ खाने–पीने का मन है ?''

''हाँ बेटा! चाय पी लूँगी।''

''ठीक है!'' प्रखर ने रसोई बनाने वाली बाई

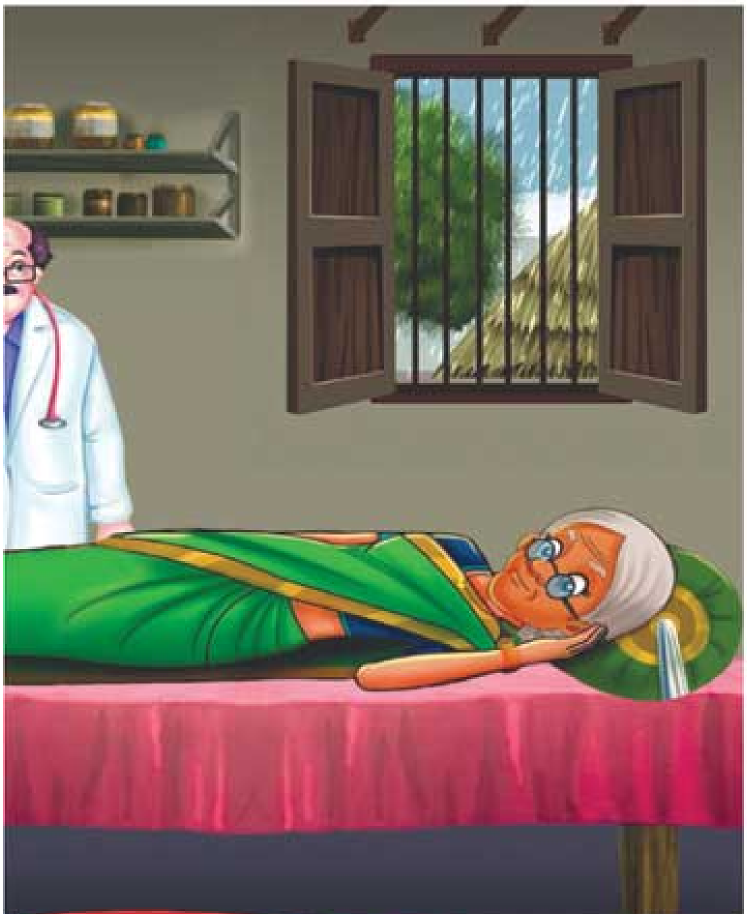

को आवाज लगाई और कहा– ''तीन कप चाय और साथ में बिस्किट ले आना।'' चाय पीते–पीते प्रखर दादी से कहता है– ''काश, हम सब साथ रहते।''

मामा और मामी आस्ट्रेलिया रहते हैं, और यहाँ नानी अकेली। मैं आपके पास रहता हूँ तो दादी अकेली और दादी के पास जाता हूँ तो नानी अकेली।

नानी प्रखर से– ''बेटा कुछ संबंध ऐसे होते हैं उनमें दूरियाँ बनी रहे, वही अच्छा होता है, कभी तुम मिलने चले आए और कभी मैं।''

''लेकिन नानी..।''

नानी बात काटते हुए– ''हर संबंध के दायरे होते हैं बेटा! संबंधों की डोर बहुत कोमल होती है।''

दादी सब सुन रही थीं और कहा– ''सही तो कह रही हैं प्रखर! आप अच्छे से समझ सकती हो, इसमें बुराई ही क्या है, दुःख में एक दूसरे का सहारा बनेंगे। एक अकेला ही होता है। लेकिन जब एक और मिल जाता है, तो ग्यारह बन जाते हैं।''

नानी– ''मेरे विचार से बिना सोचे, जल्द बाजी में, हमें कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। प्रखर बेटा! इस बात को मेरी मनाही मत समझना।''

''बेटा! हम हर चीज को अपने दृष्टिकोण से देखते हैं, दूसरे के दृष्टिकोण से नहीं। मुझे थोड़ा समय दो।''

शाम को जब प्रखर वापस जाने लगा तो नानी ने कहा– ''प्रखर बेटा! मैंने निर्णय कर लिया है।''

''क्या नानी ?''

''यही की एक और एक ग्यारह होते हैं।''

दादी– ''एकदम सही निर्णय किया आपने, मैंने अपना बेटा खोया है, तो आपने भी तो अपनी बेटी खोई है। दोनों का दुःख बराबर है।''

''जब जीवन में किसी कारण से संतुष्टि मिलती है, तो अंदर के घाव भरने लगते हैं।'' प्रखर प्रसन्न होता है और दादी प्रखर को सीने से लगा लेती हैं।

– गाजियाबाद (उ. प्र.)

गोपाल का कमाल

हाजिर जवाब गोपाल

– तपेश भौमिक

बचपन से ही गोपाल किसी के सवालों का उचित उत्तर देने में प्रवीण था। किसी भी उत्सव में बन–ठन कर जाना जहाँ उसको प्रिय था वहीं जैसा प्रश्न वैसा उत्तर देना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल था।

पहला अवसर

तब गोपाल कोई आठ–दस वर्ष का बालक ही था, जब एक शादी के अवसर पर वह काफी बन–ठन कर चला था। लोग उसके गोल–मटोल चेहरे और तुरंत उत्तर देने की कला होने के कारण छेड़ने से कभी नहीं चूकते थे। गाँव के एक वृद्ध से गोपाल को देखकर रहा नहीं गया। उन्होंने बातों–बातों में कहा दिया कि अबकी बार गोपाल की बारी है। इस बात के कहते ही चारों ओर 'हा–हा, ही–ही' का दौर शुरू हो गया। सभी लोग गोपाल की ओर इस आशा में देखने लगे कि वह कोई टका–सा उत्तर अवश्य देगा। लेकिन उसने ऐसा प्रदर्शित किया कि जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं।

कुछ ही दिनों बाद गोपाल को एक मृत व्यक्ति के श्मशान–यात्रा में जाने का अवसर मिला। श्मशान–यात्रियों में वे वृद्ध भी थे। बस क्या था, जैसे ही मृत व्यक्ति के शरीर का दाह–संस्कार किया जाने लगा वैसे ही गोपाल ने उस वृद्ध से चिल्ला कर कहा– ''अब आपकी बारी है।'' लोगों ने जैसे ही इस बात को सुनी वैसे ही सभी पुरानी बात का स्मरण करते हुए हँसने लगे। उस अवसर पर वृद्ध का चेहरा देखने लायक ही था। किसी ने तभी कहा, ''गोपाल से लिया पंगा, पड़ गया बड़ा महँगा।''

दूसरा अवसर

गोपाल के पड़ौस की एक बेटी का विवाह होने वाली थी। लड़के वाले देखने आए। उन दिनों लड़के–लड़कियों का विवाह कम आयु में हो जाया करती थी। लड़की काफी घबराई हुई थी। वह सदी में लिपटी अपनी माँ के साथ बैठक की ओर आ रही थी कि उसके पैर दरवाजे की चौखट से टकरा गए और वह गिर पड़ी। एक पैर पर मोच आ जाने के कारण वह लंगड़ा कर चल रही थी।

बातों–बातों में लड़की के बाप ने जब लड़की से उसका नाम पूछा तो उसने कुछ अटकते हुए अपना नाम चलन्तिका बताया। लड़के बाप ने यह सुनते ही कहा, ''चलना नहीं आता नाम है चलन्तिका।'' गोपाल वहीं हाजिर था। वह तुरंत कुछ कहने ही जा रहा था कि लोगों ने उसे रोक लिया।

अब बारी थी लड़की वालों का लड़का देखने का। लड़की वालों में गोपाल भी सम्मिलित हो गया। कई लोगों ने गोपाल को न ले जाने की सलाह दी। लेकिन उसने जिद्द करके उनके साथ चल निकला। गोपाल के साथ चलने पर कई लोगों ने यह आशंका व्यक्त की कि वह लड़के वालों के यहाँ कोई न कोई गुल अवश्य खिलाएगा।

लड़की के पिता ने लड़के से उसका नाम पूछा तो वह कहने में कुछ अटक रहा था। लड़के के पिता ने आगे बढ़ कर कहा, ''मेरे बेटे का नाम पद्म लोचन है। लोग उसे प्यार से पद्म कहकर पुकारा करते हैं।'' लड़के की एक आँख में दोष था। गोपाल ने झट कह दिया, ''काना पूत पद्मलोचन!''

अब लड़के के पिता का चेहरा देखने लायक था।

तीसरा अवसर

गोपाल जवान होते-होते एक बड़े तोंद के मालिक भी बन गए थे। साथ ही सिर से टकले और गाल से गोल-गप्पा। ऐसे में जब उनकी हाजिर जवाबी और हास्य-रस की बातें मुँह से छिटकती तो लोगों का हँसते-हँसते हाल-बेहाल हो जाया करता था।

गोपाल अपने गोप-मटोल शक्ल-सूरत में वैसे ही मसखरी करने वालों-सा दिखता था। अब जब उन्हें बारात में जाने का अवसर मिलता तो वह इतना सज-धज कर जाते कि लोगों की नजरें उनकी ओर घूम जाती। यार-दोस्त मजाक भी खूब करते।

बारात जब लड़की वालों के यहाँ पहुँची तो स्वागत-सत्कार करने वाले लोगों में से एक को कुछ शरारत सूझी। उसने गोपाल से कहा हमारे यहाँ बंदरों का उत्पात खूब है। आप जरा सम्हल कर रहिएगा क्योंकि वे आपको अपनी ही बिरादरी का समझ कर आपसे लिपट न जाए। इतना कहते ही बरातियों में गुस्से की लहर दौड़ गई। गोपाल ने सबकी ओर संकेत करते हुए कहा कि वे चुप ही रहें।

वे कब चुकने वाले थे! उन्होंने तुरंत कह दिया- ''हमने भी बहुत बंदर देखे हैं, पर आप जैसा असभ्य बंदर कभी नहीं देखा जो अपनी ही जाति का ऐसा अपमान करे। लानत है आपको।''

- गुड़ियाहारी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

थोड़ी-थोड़ी डॉक्टरी

जब मोच आ जाए

- डॉ. मनोहर भण्डारी

गोवर्धन अहीर ने कहा कि- ''खेलते समय या काम करते समय पांवों में मोच आ जाती है। ऐसे समय क्या करना चाहिये? यह भी हमें पता होना चाहिये?'' सब लोग बोले, ''हाँ-हाँ यह तो हमें पता होना ही चाहिए।''

मोहन ने कहा- ''मोच आने पर जोड़ को जरा भी नहीं हिलाएँ। रोगी को लिटा दें। उसके मोच खाए पैर के नीचे तकिया रख दें। ऐसा करने से दर्द और सूजन कम हो जाती है।''

गोवर्धन जी ने पूछा- ''और क्या करना चाहिये?''

मोहन ने बतलाया- ''पहले २४ घंटों में मोच खाए पैर को कुछ देर ठंडे पानी में डुबाकर रखें। और उसके बाद गरम पानी में थोड़ा नमक डालकर सिकाई करें। ऐसा करने से दर्द तथा सूजन में आराम मिलता है। एसपीरिन की गोलियाँ देने से दर्द और सूजन कम हो जाती है। गर्भवती औरतों और छोटे बालकों को एसपीरिन की गोलियाँ नहीं देना चाहिए।

- इन्दौर (म. प्र.)

चितकबरी

– वैभव कोठारी

उसकी माँ की मृत्यु तभी हो गई थी जब वो मात्र एक घण्टे की थी। वो लड़खड़ा कर खड़े होना सीख रही थी और उसकी माँ लड़खड़ा कर गिर गई थी। और ऐसा गिरी कि फिर कभी न उठी।

मैंने देखा वह अभी–अभी जन्मीं, अपनी माँ की ही तरह चितकबरी थी। वैसी ही सुन्दर आँखें। उसके कपाल पर सफेद टीका भी, बिल्कुल अपनी माँ की ही तरह...। नानाजी के सामने इस एक घण्टे की बछिया को सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती थी। उन्होंने किसी अन्य गाय का दूध बुलवाया। बोतल में भरकर बछिया को पिलाया। पहले बोतल से पीने में उसे बहुत असुविधा हुई लेकिन फिर ये उसका अभ्यास बन गया।

कुछ ही दिनों में वो कुलाँचे भरने लगी। दौड़ में वो मुझे भी पीछे छोड़ देती। जब वो अपनी पूँछ उठाकर दौड़ती तो उसकी सुन्दरता और फुर्ती तो बस देखते ही बनती। सर्दियों की सुबह में हम उसे धूप में खुला छोड़ देते। वो बहुत दूर तक दौड़ते जाती और फिर बड़ी तेजी से पलटकर हमारे पास आ जाती। उसके गले में बंधी पीतल की घण्टी बजती... टन... टन... टन....। मेरी आवाज सुनकर वो अपने कानों को आगे–पीछे की ओर घुमाती। उसके आने से हम अपनी चितकबरी गाय को खोने का दुःख भूल चुके थे। देखते ही देखते वो बहुत बड़ी हो चुकी थी। हृष्ट–पुष्ट, मजबूत सुन्दर... बिल्कुल अपनी चितकबरी माँ की तरह दिखाई देती। अब वो दूध नहीं घास खाती... गुड़ और रोटी भी। गाँव के अन्य मवेशियों के साथ जंगल में चरने को जाने लगी थी। वो हमेशा समय पर घर लौट आती जैसे उसके पास कोई घड़ी हो। गायों के लौटने के इस समय को ही तो गोधूलि बेला कहा जाता है।

दरवाजे पर आकर वो जोर से रम्भाती जैसे आवाज देकर कह रही हो– ''मैं आ गई!''

मैं उसे पानी पिलाता। उसके आने का सुख

शब्दों में नहीं कहा जा सकता। कुछ देर उसके साथ बिताता। उसके साथ बिताया समय बहुत स्वर्णिम होता।

समय बीतता गया। उसने एक बछड़े को जन्म दिया। बछड़ा... बिल्कुल लाल रंग का। काली आँखों वाला। नटखट लजालू। नन्हा चितचोर। मुझे देखकर वो अपनी माँ के पैरों में जाकर छुप जाता। माँ उसे चाटकर दुलारती। वो अपनी माँ के थनों को मुँह में लेकर दूध पीता। देखते ही देखते वो भी बड़ा होने लगा। दो वर्षों के बाद उसके एक भाई ने जन्म लिया। वो सफेद रंग का बछड़ा... बिल्कुल बगुला सफेद। हमारे पास लाल और सफेद रंगों के बैलों की जोड़ी हो गई.... सुन्दर जोड़ी... मजबूत जोड़ी... मेहनती जोड़ी।

कुछ वर्षों के बाद इन दोनों बैलों की माँ की बूढ़ी हो चुकी थी। पहले से अधिक थकी.... विश्राम अधिक करती.... खाती बहुत कम.... कभी-कभी तो न ही खाती। नानाजी ने उसे चिकित्सक को दिखाया। लेकिन वो स्वस्थ नहीं हुई और विदा हो गई.... हमेशा के लिये विदा।

मैं रोने लगा। नानाजी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा- ''ये प्रकृति का नियम है।''

उसका खूँटा अब सूना रहने लगा... जहाँ वो बंधी रहती थी। एक दिन नानाजी ने उस खूँटे को उखाड़ दिया और वहाँ गुलाब की कलम लगा दी। पौधा पनप गया। आज सुबह ही एक कली खिली है... सुर्ख गुलाब आकर्षित कर रहा है। मुझे लग रहा है मेरी चितकबरी लौट आयी है... गुलाब के रूप में। मुस्कुरा रही है.... महक रही है। मेरी गाय।

- खण्डवा (म. प्र.)

कविता

बीते कल के रंग

- शशि पुरवार

उत्सव की वह सौंधी खुशबू, ना अँगूरी बेल।
गली मुहल्ले भूल गए हैं, बच्चों वाले खेल।।
लट्टू, कंचे, चंग, लगौरी,
बीते कल के रंग।
बचपन कैद हुआ कमरों में,
मोबाइल के संग।।
बंद पड़ी हैं अब बगिया में, छुक-छुक वाली रेल।
गली मुहल्ले भूल गए हैं, बच्चों वाले खेल।।
बारिश का मौसम हैं, दिल में,
आता बहुत उछाव।
लेकिन बच्चे नहीं चलाते,
अब कागज की नाव।।
अंबिया लटक रही पेड़ों पर, चलती नहीं गुलेल।
गली मुहल्ले भूल गए हैं, बच्चों वाले खेल।।
दादा-दादी, नाना-नानी,
अब बदले हालात।
राजा-रानी, परी कहानी,
नहीं सुनाती रात।।
छत पर तारों की गिनती, सपनों ने कसी नकेल।
गली मुहल्ले भूल गए हैं, बच्चों वाले खेल।।

- मुंबई (महाराष्ट्र)

बाल साहित्य के प्रयोगधर्मी रचनाकार : डॉ. हरीश निगम

प्रस्तोता–डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

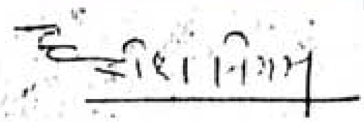

प्यारे बच्चो!

डॉ. हरीश निगम (३१ जुलाई १९५५ – २८ जुलाई २०१८) बाल साहित्य के प्रयोगधर्मी रचनाकार थे। उन्होंने बच्चों के लिए नवगीत शैली में ढेरों सुंदरतम रचनाएँ लिखीं। वे नवगीत विधा के शीर्ष रचनाधर्मी थे। उन्होंने बच्चों के लिए कविता, कहानी और नाटक तीनों ही विधाओं में बेजोड़ लेखन किया। उनका जन्म मध्य प्रदेश के मैहर नामक चर्चित धार्मिक स्थल में हुआ था। मैहर में ऊँची पहाड़ियों पर देवी शारदा का विख्यात मंदिर है। आल्हा–ऊदल का अखाड़ा भी यहीं है। पिता रामगोपाल निगम और माता सुंदरबाई निगम ने शायद ही सोचा होगा कि एक दिन उनकी यह संतान शिक्षा और साहित्य जगत की अनमोल धरोहर सिद्ध होगी। निगम जी आगे चलकर सतना को अपनी कर्मभूमि बनाया। वे शासकीय महाविद्यालय के प्राध्यापक के रूप में आजीवन वहीं सेवारत रहे।

निगम जी सरल सहज लेखन के पक्षधर थे। उनकी कविताओं में रोचक कल्पनाएँ खूब देखने को मिलती हैं। चंदा मामा पर तो कवियों ने खूब लिखा है किन्तु निगम जी ने **चंदा मामा वाली मामी** पर एक मजेदार कविता लिखी थी। आप उसे खोजकर पढ़ना।

उनकी रचनाओं को देवपुत्र सहित हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं और पाठ्य–पुस्तकों में स्थान मिला। अनेक संकलनों में उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ संग्रहीत हैं। निगम जी की बाल साहित्य की प्रमुख पुस्तकें हैं **टिंकू बंदर, चोंच चिरैया मांजे, पंख कभी उग आते, अम्मा जरा बताओ** (बाल गीत संग्रह), **मिक्कू जी की लंबी दुम** (बाल कथा संग्रह)

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ उत्कृष्ट बाल रचनाएँ

तपने के दिन

चले गये थर थर, कँपने के दिन,
आए हैं सुबह–शाम, तपने के दिन।
मीठी–सी धूप, हुई मिर्ची–सी
घूमे है धूल हवा, फिरकी–सी,
लू वाली खबरों के, छपने के दिन,
आए है सुबह–शाम, तपने के दिन।
मौसम को फिर, बुखार जैसा है,
छाँव दवा, जल, रुपया पैसा है,
आँखों में कुल्फी के, सपने के दिन,
हर पल तो, प्यास लिये आता है,
नाम शरबतों वाले, जपने के दिन,
आए हैं सुबह–शाम, तपने के दिन।

पहली तारीख

खाएँगे रसगुल्ले छोले,
पापा जी मुन्नू से बोले–
आने दो पहली तारीख।
गुड़िया की गाड़ी आएगी,
मम्मी की साड़ी आएगी,
आने दो पहली तारीख।
पप्पू जी पहनेंगे चश्मा,
सोचेंगे कुछ नया करिश्मा।
आने दो पहली तारीख।
सैर करेंगे चिड़िया घर की,
खुशियाँ होंगी दुनिया भर की,
आने दो पहली तारीख।

पापा दफ्तर से घर आए

थके–थकाए,
पापा
दफ्तर से घर आए।
पप्पू बहुत हुआ अब ऊधम,
गुड़िया, तुम भी शोर करो कम।
टॉमी बैठो
पूँछ दबाए।
कितनी ही फाइल निपटाते,
अफसर वाला रौब जमाते।
फूलों–से
पापा कुम्हलाए।
घर दफ्तर की लंबी दूरी,
धूल–धुआँ सहना मजबूरी।
पापा जी को
बहुत सताए।
मुस्कानों का खोलो ताला,
बस्ता अभी शिकायत वाला।
मम्मी रखना
जरा छिपाए।

सेर को सवा सेर

पात्र–सेठ जी, मुनीम जी, रामू।

(पर्दा उठता है, मंच पर ड्राईंग रूम का दृश्य। सेठ जी बड़ी बेचैनी से इधर–उधर घूम रहे हैं।)

सेठ जी– (**झल्लाते हुए**) वंशी! ..... ओ वंशी! कहा गया रे!.... कोई उत्तर ही नहीं देता सब बहरे हो गए क्या.... अरे ओ वंशी का बच्चा! (**मुनीम जी का प्रवेश**)

मुनीम जी– क्यों आसमान सिर पर उठा रखा है सेठजी। क्यों इतना चिल्ला रहे हैं आप ?

सेठ जी– अरे क्यों ना चिल्लाऊँ। भूख के मारे पेट में चूहे क्रिकेट खेल रहे हैं.... देखो घड़ी। देखो, दस बस चुका है और वंशी का बच्चा अभी तक नाश्ता नहीं लाया।

मुनीम जी– और लाएगा भी नहीं।

सेठ जी– क्यों नहीं लाएगा ? आखिर घर में वह नौकर किस लिए है।

मुनीम जी– वाह सेठ जी! अब भला बताइए, बिना पगार के कोई कब तक नौकरी करेगा ? काम भी करे और भूखों भी मरे। इससे तो बिना काम किए भूखों मरना फायदेमंद होगा ना।

सेठ जी– लेकिन वो मेरे मन मुताबिक काम तो करे पहले....। मुनीम जी (बात काटकर) अब मुँह न खुलवाएँ सरकार आप की चतुराई मुझे मालूम है।

सेठ जी– ठीक है! ठीक है! लेकिन अभी भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है, चलो आज तुम्हीं 'वंशी' बन जाओ और मेरे नाश्ते का जुगाड़ करो, नहीं तो मैं तुम्हारी वंशी बजा दूँगा।

मुनीम जी– जो आज्ञा महाराज! अब कुछ तो करना ही पड़ेगा। (मुनीम जी भीतर जाकर तुरंत लौटते हैं।)

सेठ जी– (गुस्से से) तुम अभी तक गए नहीं।

मुनीम जी– अरे जा रहा हूँ, लेकिन मेरी बात

तो सुनिए....। बाहर एक गरीब लड़का आया है, काम माँग रहा है, बुलाऊँ?

सेठ जी– (खुश होकर) वाह! इसे कहते हैं, बिल्ली के भाग से छींका टूटना। बुलाओ! बुलाओ!! (मुनीम जी अंदर जा कर राम के साथ वापस लौटते है।)

सेठ जी– हूँ! काम चाहिए?

रामू– जी, मालिक! बहुत मुसीबत में हूँ। कोई भी काम कर लूँगा।

सेठ जी– क्या नाम है तुम्हारा?

रामू– रामू मालिक!

सेठ जी– हाँ तो रामू! मुझे एक ऐसे होशियार व्यक्ति की आवश्यकता है जो हर काम कर ले, तुम कर सकोगे?

रामू– क्यों नहीं मालिक!

सेठ जी– तो रामू! मैंने अभी से तुम्हें काम पर रख लिया।

रामू– बड़ी कृपा मालिक! (हाथ जोड़ता है।)

सेठ जी– तो रामू! ऐसा करो, आज मेरी चटनी खाने की बड़ी इच्छा हो रही है। तुम दो–चार कच्चे आम तो ले आओ! और मुनीम जी तुमको जो कहा है वह तुम ले आओ। **(गुस्से से मुनीम की ओर देखते हैं तो मुनीम जी भीतर भागते हैं।)**

सेठ जी– रामू! तुम भी जल्दी जाओ।

रामू– जी मालिक! अभी जाता हूँ। **(सेठ जी अखबार पढ़ने लगते हैं और रामू परेशान सा सेठ जी की ओर ताकता रहता है, कुछ देर बाद।)**

सेठ जी– (अखबार हटाकर) रामू! तुम गए नहीं?

रामू– जी... वो... पैसे दे दीजिए। आम लाने के लिए।

सेठ जी– अरे वाह! पैसे से तो कोई भी आम ले आएगा, होशियारी तो बिना पैसे के लाने में है। जा जल्दी ले आ। (सेठ जी का प्रस्थान, रामू हैरान परेशान खड़ा रह जाता है।)

रामू– (अपने आप से) बिना पैसे के आम! ऐसा तो नहीं कि सेठ जी मेरे होशियार होने की परीक्षा ले रहे हों...। हाँ, उन्हें होशियार नौकर चाहिए न।

... हाँ यही होगा... चल बेटा रामू देखते हैं। **(रामू का प्रस्थान)**

(रामू के जाते ही दूसरी ओर से मुनीम जी खाता–बही लेकर आते हैं और लिखने लगते हैं। कुछ देर बाद आम लिए हुए रामू का प्रवेश।)

रामू– (थके स्वर में) लीजिए मुनीम जी आम।

मुनीम जी– अरे! ले ही आए तुम... शाबाश!... लेकिन कैसे मिले?

रामू– अरे कुछ न पूछिए... उस मोड़ वाले बगीचे के माली की कितनी तारीफ की, उसके आमों की तारीफ की और अब क्या बताएँ... आखिर उसने हमें ये चार आम दे ही दिए। मैं सेठ जी की होशियारी की परीक्षा में सफल रहा है न?

मुनीम जी– (**मुस्कुरा कर**) आज तो सफल रहे, अब सुबह देखना! **(मुनीम जी जाते हैं और रामू वहीं लेट जाता है, मंच पर प्रकाश एकदम धीमा होकर फिर धीरे–धीरे तेज होता है, सेठ जी का प्रवेश।)**

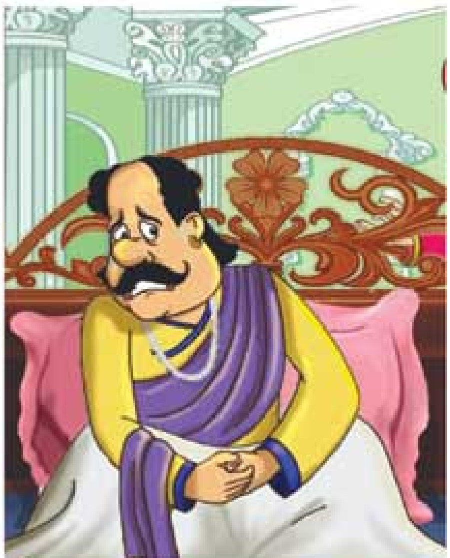

सेठ जी– रामू! ओ रामू! अरे सो रहा है अभी तक? (**हड़बड़ा कर उठते हुए**) जी मालिक! लीजिए उठ गया।

सेठ जी– देख रामू! जल्दी से एक गट्ठर लकड़ी ले आ। नहीं तो आज खाना

कैसे पकेगा?

रामू– आप चिन्ता न करें, अभी लाता हूँ।

सेठ जी– जल्दी ले आ! (**सेठ जी भीतर जाने लगते हैं।**)

रामू– (**उनके पीछे भागते हुए**) मालिक! लकड़ी के लिए पैसे तो दे दीजिए।

सेठ जी– (**झल्लाकर**) फिर पैसे! अरे पैसे से तो कोई भी लकड़ी ले आएगा, होशियारी तो बिना पैसे के लाने में है। (**सेठ जी रामू को हैरान छोड़कर चले जाते हैं।**)

रामू– (**अपने आप से**) लगता है अभी मेरी परीक्षा समाप्त नहीं हुई। चल बेटा रामू करते हैं कोई जुगाड़।

(रामू अंदर जाकर लकड़ियों का गट्ठर लादे मंच पर लौटता है और दूसरी तरफ से मुनीम जी आते हैं।)

रामू– (**लकड़ियाँ पटक कर**) लीजिए मुनीम जी! लकड़ी।

मुनीम जी– अरे वाह! ले आया। लेकिन कैसे लाया?

रामू– अरे कुछ न पूछिए, स्वयं जंगल से काटकर लाया हूँ, भला बिना पैसे के कोई लकड़ी क्या, लकड़ी का धुआँ भी देगा। (**सेठ जी का प्रवेश**)

सेठ जी– अरे वाह! क्या लकड़ियाँ हैं। जाओ इन्हें रसोईघर में रख आओ। (**रामू लकड़ियाँ उठाकर जाता है।**)

सेठ जी– क्यों मुनीम जी! कैसी रही? मानते हो ना मुझे कि मैं बिना हर्र और फिटकरी के ही रंग चोखा ला सकता हूँ। (**दोनों हँसते हैं।**)

(प्रकाश एकदम धीमा होकर पुन: धीरे-धीरे तेज होता है। एक तरफ से रामू और दूसरी तरफ से सेठ जी का प्रवेश) सेठ जी रामू! ओ रामू!

रामू– हाँ मालिक।

सेठ जी– रामू आज दूध पीने की मेरी बड़ी इच्छा हो रही है, तू जल्दी से एक गिलास ताजा दूध तो ले आ। (**गिलास आगे बढ़ाते हैं।**)

रामू– (**गिलास पकड़ते हुए**) जी... वो... पैसे।

सेठ जी– फिर वही पैसे। अरे पैसे से तो कोई भी दूध ले आएगा, होशियारी तो बिना पैसे के लाने में है। जा, जल्दी ले आ। (**सेठजी का प्रस्थान**)

रामू– (**हैरान होकर**) हे भगवान! कहाँ फँस गया... (**सोचते हुए**)... अब सेठ जी की होशियारी की परीक्षा मेरे कुछ-कुछ समझ में आ रही है... अब सेठजी को होशियारी दिखानी ही पड़ेगी। (**रामू अंदर जाकर तुरंत लौटता है।**)

रामू– मालिक! ओ मालिक लीजिए दूध!

(**सेठ जी व मुनीम आते हैं।**)

(**सेठ जी को गिलास पकड़ाते हुए।**)– हाँ मालिक! लीजिए दूध पीजिए। **(सेठ जी गिलास लेकर जल्दी से मुँह में लगाते हैं फिर एकदम झल्ला उठते हैं।)**

सेठ जी– क्या मजाक है? तू कह रहा है दूध पीजिए। लेकिन ये गिलास तो एकदम खाली है?

रामू– (**मुस्कुरा कर**) अरे वाह सेठ जी! दूध से भरे गिलास से तो कोई भी दूध पी लेगा। होशियारी तो खाली गिलास से दूध पीने में है।

मुनीम जी– सेठ जी! मिल गया न सेर को सवा सेर। (**तीनों स्थिर हो जाते हैं और पर्दा गिरता है।**)

ससुराल की सुपारी

बात बहुत पुरानी है। उस समय काला कौआ नमक का घर बनाया करता था, और सुरीली कोयल मोम का घर बनाती थी। एक पेड़ पर कौआ और कोयल दोनों के घर थे। कोयल सीधी-सादी थी तो कौआ खूब चालाक।

एक साल बरसात के मौसम में कई दिन लगातार तेज बारिश हुई। इतनी तेज बारिश कि कोई भी पशु-पक्षी अपने खाने तक की व्यवस्था करने घर से बाहर ही नहीं निकल पाए। जो घर में था उसी से काम चलता रहा। बारिश होती रही, होती रही और एक दिन कौवे का नमक का घर पानी में गल कर बह गया। वह शाम को कोयल के पास पहुँचा और बोला ''कोयल बहन! मुझे अपने घर में जो जाने दो ना।'' कोयल को तरस आ गया, उसने कहा, ''आ जाओ, लेकिन तुम सोओगे कहाँ, मेरा घर तो छोटा है। खैर, तुम ऐसा करो कि चूल्हे पर जाकर सो जाओ।'' इस पर कौआ बोला- ''लेकिन वहाँ की गर्मी से तो मैं जल जाऊँगा।'' कोयल बोली- ''अच्छा जाओ, चक्की पर सो जाओ।''

''नहीं!'' कौआ चिल्लाया ''वहाँ तो मैं पिस जाऊँगा।'' कोयल सोचती रही फिर बोली- ''अच्छा जाओ तुम सामान रखने के कमरे में सो जाओ।'' कौआ प्रसन्न होकर वहाँ से चला गया। रात को अचानक कुट-कुट की आवाज से कोयल की नींद टूटी तो उसे ध्यान आया कि यह आवाज उसके सामान रखने के कमरे से आ रही है। कोयल ने आवाज लगाई- ''कौवे भाई! क्या खा रहे हो?'' कौवे ने जवाब दिया- ''अरे कुछ नहीं, बस थोड़ी सी भुनी सुपारी आई थी कल ससुराल से, वही चबा रहा हूँ।'' कोयल जवाब सुनकर सो गई।

सुबह जब कोयल उठी और नाश्ता करने के लिए सामान वाले कमरे में गई तो वहाँ का दृश्य देखकर उसने सिर पीट लिया। वहाँ उसके सारे के सारे जमा किए चने गायब थे, बस चारो ओर चने के छिलके पड़े थे और कौआ नदारद था। वह ससुराल की सुपारी का मतलब समझ गई। कौवे की धूर्तता पर उसे बहुत गुस्सा आया, लेकिन अब क्या हो सकता था। बेचारी दुखी होकर बड़बड़ाने लगी- ''मेरी ही गलती थी जो मैंने इस दुष्ट कौवे को अपने घर में आने दिया। सच ही कहा है कि दुष्ट से दोस्ती नहीं करनी चाहिए।'' और तब से कौआ और कोयल कभी पास-पास नहीं रहते।

शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।

संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा-

Post	Experience	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER (2 Yrs Experience)	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media) - PG	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLM	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	LLB	2.4 - 3 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।
- **Ph.D. candidates** भी आवेदन कर सकते हैं। **Salary interview** के दौरान तय होगी।
- योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक, **Karate Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Operator & Clerk** भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।

- **Graduate Management Trainee (GMT)**
  योग्यता-2023 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8000/-, 12वीं में 10,000/- Graduation Ist year में 12,000/-, IInd Year में 15,000/-, IIIrd Year में 18,000/-, MBA/MCA Ist Year में 22,000/-, MBA/MCA IInd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।
- **Assistant Staff Cadre (ASC)**
  योग्यता-2023 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT / PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा मुफ्त भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT / PCT के दौरान Stipend - Ist year : 8,000/- प्रतिमाह व आवास, IInd year : 10,000/- प्रतिमाह व आवास, IIIrd year : 12,000/- प्रतिमाह व आवास। After training 15,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना **CV /** आवेदन भेजें। **CV /** आवेदन **Email** से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 I Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन की अंतिम तिथि : 31 मई 2023

अनोखा जन्मदिन

– संदीप पांडे 'शिष्य'

सौरभ अपने पिता जी के पास भागता हुआ आया और कैलेंडर दिखाते हुए बोला कि–''सुनो, सुनो ना पिता जी अगले महीने मैं सात वर्ष का हो जाऊँगा। सौरभ के कथन में छुपा प्रश्न उसके पिता समीर ने भाँप लिया कि बेटा उसका जन्मदिवस के लिए वे क्या तैयारी कर रहे हैं और क्या उपहार देने की सोच रहे हैं। मुस्कुराते हुए समीर ने पूछा, ''बेटा! यह तो अच्छी बात है, पर मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो, और ये बताओ कि दो वर्ष पहले तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें क्या उपहार मिले थे?'' और उसके उत्तर से पहले ही पिता जी बोल पड़े, ''मामा ने रिमोट वाली गाड़ी दी थी और चाची एक सुंदर पोशाख लाई थी और आपके पिता जी के मित्र भी भेंटें लाए थे....। अब तो उपहार कहाँ है? कार तो थोड़े दिन में ही खराब हो गई थी और पोशाख भी छोटी हो गई और....। सौरभ सोचकर बताने लगा हाँ जी पिता जी सब मँहगे खिलौने खराब भी हो गये। और सबसे अच्छा तो पौधे वाली भेंट थी। वो गमले में अब भी फूल खिला रहा है।'' सौरभ की बात पूरी हुई।

अब पिता जी ने पूछा, ''ये बताओ सौरभ! कि पिछले वर्ष जन्मदिन पर हम कहाँ गए थे? ''अरे हाँ पिता जी! याद आया पिछली बार खूब मजा आया था जहाँ आप लेकर गए थे। कितने सारे बच्चे थे। उनके पास तो चप्पल और जूते भी नहीं थे। फिर माँ और आपने मेरे हाथ से सबको कलरफुल जूते दिलाए थे और सबको पाव भाजी भी खिलाई थी।

एक बच्चे ने तो वही पर मुझे कागज से फूल बना कर दिया था। मेरे पास रखा है सँभालकर। तो हम फिर वही चलेंगे सौरभ ने चहकते हुए पूछा ? नहीं इस बार हम आपको एक अलग जगह लेकर जायेंगे। ''कहाँ ? कहाँ! पिता जी ?'' सौरभ ने प्रश्न किया।

''बहुत सारे दादा-दादियों के पास ले चलेंगे। उनको तुम झाँसी की रानी वाली कविता सुनाना तो तुम पूरे जोश में गाते हो। फिर हम देवांश को भी ले चलेंगे वो गाना बहुत अच्छा गाता है। ''हाँ हाँ! देवांश को भी और मोहिनी को भी।'' सौरभ की उमंग तो बढ़ती ही जा रही थी। तो मेरी भी सुन लो जी, मिठाई भी हम एक नहीं दो बाँटेंगे, माँ ने दूध का गिलास हाथ में थमाते सौरभ से कहा। एक तुम्हारी पसंद का खोपरा पाक और दूसरा आटे गुड़ का हलवा जो सबको बँटेगा। सौरभ के चेहरे पर दबे छुपे ही सही संतोष के भाव समीर ने पत्नी संग पढ़ लिए थे। देने की खुशी कितनी बड़ी है यह बात बेटे सौरभ द्वारा आत्मसात होता ज्ञान दोनों अनुभव कर पा रहे थे।

– अजमेर (राजस्थान)

बंदर मामा

– आशीष मोहन

बंदर मामा सोच रहे
जो बन जाऊँ वन मंत्री
चप्पा-चप्पा पहरा कर दूँ
खड़े रहेंगे संत्री।
फिर कोई न काट सके वन
मार सके न शेर
जो आयेगा बुरी नीयत से
कर देंगे हम ढेर।
फिर जंगल के कोने-कोने
होगा केवल मंगल
मानव के मंगल के घर
जंगल... जंगल... जंगल...।

– सिवनी (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 19

देवांशु वत्स

1. सात सुरों में से एक।
2. स्वच्छ, सफेद, पवित्र, निर्मल।
3. योगी, तपस्वी।
4. सचेत, सतर्क।
5. सब समय होने वाला।
6. मूर्ति की उपासना।

1.	सा					
2.	सा					
3.	सा					
4.	सा					
5.	सा					
6.	सा					

उत्तर: 1. सा, 2. साफ, 3. साधक, 4. सावधान, 5. सार्वकालिक, 6. साकारोपासना।

प्रात: स्मरणीया देवी अहिल्या बाई होळकर

– उमेश कुमार नीमा

अहिल्याबाई एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न नारी थीं। एक छोटे से गाँव के साधारण परिवार में जन्म लेकर एक विशाल राज्य की सर्वेसर्वा बनकर अपने तेजस्वी, कर्मठ व महान जीवन के द्वारा अपने जीवनकाल में ही माँ, व देवी के रूप में वे पूजित हो गईं। अक्षय कीर्ति प्राप्त करना अहिल्याबाई का ही काम था। उनका जन्म ३१ मई वर्ष १७२५ में चौंडी गाँव के पटेल माणकोजी शिंदे के यहाँ हुआ था। उनकी माता बहुत ही विदुषी, धर्मात्मा तथा कर्त्तव्य–परायण थी। अहिल्याबाई उनके साथ छाया की तरह रहकर सारे धार्मिक कार्यों में भाग लेती थीं। उस युग की अन्य लड़कियों की तरह उन्हें भी कोई विद्यालयीन शिक्षा नहीं मिली थी। उनके पिता ने उनको घर पर ही रखकर पढ़ना–लिखना सिखाया व कुछ धर्मग्रंथ भी पढ़ाए। घर ही उनकी पाठशाला थी व माता–पिता ही उनके शिक्षक थे। माता–पिता के परम धार्मिक, सरल, सात्विक व कर्त्तव्य–परायण जीवन का परिणाम, अहिल्याबाई के जीवन पर स्थायी रूप से पड़ा। बचपन के श्रेष्ठ संस्कारों के कारण ही अहिल्याबाई इतनी महान बनकर चिरस्मरणीय कार्य कर सकीं।

विवाह खांडेराव के साथ हुआ था तथा बाद में वे एक पुत्र और पुत्री की माता भी बनीं। मल्हारराव

(उनके ससुर) अधिकतर बाहर ही रहते थे, उनकी अनुपस्थिति में अहिल्याबाई ही राज्य का सारा कार्य सफलता से संचालित करती थीं। अपने पति को पूज्य व आराध्यदेव मानकर पूर्ण निष्ठा से वे उनकी सेवा करती थी। सच्चे अर्थों में वे हिन्दू नारी थीं।

मल्हाराव होळकर, मनुष्यों के बड़े पारखी थे। उन्होंने अहिल्याबाई में एक कर्त्तव्यपरायण तथा कुशल शासक की छवि देख ली थी। वे उन्हें समय–समय पर देश की स्थिति, राजनीति के व्यावहारिक सूत्र व दाँव–पेंच, युद्ध व क्षेत्र संबंधी बातें अहिल्याबाई को समय–समय पर बताते रहते थे। वे एक वीर स्त्री थीं। कई बार मल्हारराव के साथ युद्ध क्षेत्र में भी गई थीं। २४ मार्च १७५४ के अशुभ दिन खांडेराव, अहिल्याबाई के पति की मृत्यु हो गई। उन दिनों की प्रथा के अनुसार वे भी सती होने की तैयारी करने लगीं, परन्तु मल्हारराव के बहुत समझाने पर अपनी प्रजा व अपने बच्चों के भविष्य के लिए सती नहीं हुईं, परन्तु उन्होंने अपना पूर्ण जीवन अपनी प्रजा को समर्पित कर दिया। अपने जीवन द्वारा दूसरों को सुखी करने की भावना ही उनके जीवन में बची थी।

अहिल्याबाई जितनी परिश्रमी, दानवीर, गंभीर व न्यायप्रिय थीं, उनका पुत्र उतना ही चंचल, उग्र स्वभाव का व निकम्मा था। वह प्रजा को विभिन्न तरीकों से सताया करता था। अहिल्याबाई बहुत ही न्यायप्रिय थीं। उनकी न्यायप्रियता के बारे में यह किंवदंती भी बहुत प्रसिद्ध है कि उन्होंने न्याय के पालन हेतु अपने पुत्र को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया था। अहिल्याबाई का शासन–प्रबंध भी बहुत ही उत्तम था। मल्हारराव की शिक्षा से वे मनुष्यों की भी बहुत अच्छी पारखी थीं। उनके राज्य में पदों पर योग्य व्यक्तियों की ही नियुक्ति होती थी। उनकी ईश्वर में अत्यंत आस्था थी। मल्हारराव की

शिक्षा से वे कहा करती थीं कि ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तरदायित्व रखा है, उसे मुझे निभाना है। मेरा काम प्रजा को सुखी रखना है। उनकी कर्त्तव्य-परायणता व प्रजावत्सलता की अनेक घटनाएँ हैं।

सेवा, त्याग व दान-धर्म का हिन्दू संस्कृति में बड़ा महत्व है। अपने जीवनकाल में जितने सेवा कार्य, दान-धर्म व निर्माण कार्य उन्होंने किए, उनकी कोई गणना नहीं है। निष्काम कर्मयोग का ऐसा अनूठा उदाहरण दुर्लभ है। खासगी ट्रस्ट इन्दौर द्वारा ओंकारेश्वर, महेश्वर में तथा इन्दौर में अभी भी अन्न क्षेत्र संचालित किए जा रहे हैं। उन्होंने कई मंदिर, घाट धर्मशालाएँ, छत्रियाँ आदि बनवाई। ब्राह्मणों को तथा आवश्यकता वालों को वे मुक्तहस्त से दान देती थीं। वे अन्य मतों व धर्मों के प्रति भी पूर्ण रूप से उदार थीं। होळकर राज्यों द्वारा जीते गए प्रदेशों में स्थित पंथों के पूजा स्थल को भी उन्होंने संरक्षण देकर सहायता दी थी उनको करुणा व स्नेह की शीतल छाया मनुष्यों पर ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों पर भी थी। उन्होंने कई तीर्थ स्थान भी बनवाए, कई स्थानों पर मंदिर भी बनवाए। बदरीनारायण, जगन्नाथपुरी, अयोध्या, उज्जैन आदि में कई किलों का निर्माण एवं जीर्णोद्वार करवाया तथा ओंकारेश्वर व अन्य तीर्थों व जंगलों में कई कुएँ-बावड़ियाँ भी बनवाई। इन्दौर में ही विश्वविद्यालय उनके नाम से है। इन्दौर में ही अहिल्याबाई के नाम से इन्दौर का हवाई अड्डा है।

जीवन को सुंदर-सुखकर बनाने वाली समस्त कलाओं व विधाओं का भारतीय संस्कृति से बहुत निकट का संबंध रहा है। अहिल्याबाई ने धर्मशास्त्र, कर्मकांड, वेदांत, साहित्य, व्याकरण, पूजन, कीर्तन, ज्योतिष आदि विधाओं के माने हुए पंडितों को महेश्वर में बसाया था। उन्हें यथोचित सम्मान व वैभव प्रदान किया था। निपुण कारीगरों, श्रेष्ठ मूर्तिकारों व अन्य कलाविदों को उनके वेतन के अतिरिक्त विभिन्न पुरस्कार भेंट आदि प्राप्त होते थे।

आज से लगभग दो सौ पचास वर्ष पहले महेश्वर में वस्त्र उद्योग की स्थापना करके भारतीय उद्योग व कला-कौशल को अभूतपूर्व व परम क्रांतिकारी मार्गदर्शन प्रदान किया था।

अहिल्याबाई के चरित्र में किसी प्रकार का गर्व, उथलापन या हीनता नहीं थी। वे आमों से लदी सघन अमराई के समान थीं। पवित्रता, धार्मिकता व सरलता का प्रेरणादायी आभामंडल उनके आसपास छाया रहता था। दुष्टों के लिए वे कठोर शासिका थीं, परन्तु शेष सबके लिए वे परम ममतामयी माँ थीं।

उनका आधा समय भगवत् पूजा, परोपकार और आधा समय राज्य संचालन में व्यतीत होता था। इहलोक व परलोक दोनों को समृद्ध बनाने वाली उनकी सुंदर, सुखद व व्यवस्थित जीवन शैली थी।

अहिल्याबाई के जीवनकाल में ही कई महान कवि खुशालीराम, कवि मोरोपंत, कवि व गायक अनंत आदि ने उनके गुण–गौरव बड़े भावपूर्ण शब्दों में प्रस्तुत किये हैं। दिल्ली दरबार में मरहण राजदूत हिंगणे ने नाना फड़नवीस को एक पत्र में उनकी प्रशंसा वर्णित की। सुप्रसिद्ध इतिहासकार तथा मध्यभारत के राजनैतिक प्रतिनिधि सर जानमालकम् ने लिखा है– ''उन्होंने सच्चे वैधव्य का हिन्दू आदर्श जैसा उन्होंने निभाया था, वैसा बहुत कम विधवाएँ कर सकी हैं। वे असाधारण अप्रभुत्व तथा अति श्रेष्ठतम महिला थीं।''

पंडित कृष्णशास्त्री चिपळुणकर ने स्वरचित अहिल्याबाई के चरित्र में एक स्थान पर लिखा है– स्वधर्म पर अटूट प्रेम होने पर भी विधर्मियों के साथ उन्होंने कभी द्वेष नहीं किया।

स्काटलैंड की कुमारी जोना बैलो ने भी उनकी महानता पर एक पुस्तक लिखी है। सुप्रसिद्ध विद्वान चिंतामणि विनायक वैद्य के अनुसार– ''यह लोकोत्तर महिला अपने सद्गुणों से महाराष्ट्र व मालवा के लिए ही नहीं समूची मानव जाति के लिए भूषण रूप स्थापित हुई है। प्रातः स्मरणीया देवी श्री अहिल्याबाई होळकर ने मानव मात्र के शाश्वत सुख–शांति के लिए जो कुछ किया है, उसे इतिहास में सदा याद रखेंगे। देव का श्रेष्ठ जीवन समूचे मानव समाज की अमूल्य व प्रेरक निधि बन गया है।''

– इन्दौर (म. प्र.)

कविता : अहिल्या जयंती ३१ मई

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होळकर

– श्यामपलट पांडेय

अँग्रेजों का सूर्य उग रहा
पूरब में नव आभा लेकर
प्लासी जीता, बक्सर जीता
अपनी कूटनीति के बल पर।

पूने में पेशवा प्रमुख थे
एक बड़ी ताकत बन छाए
होळकर, सिंधिया बनकर नायक
रण में साथ थे आए।

होळकर वंश की महारानी
नाम अहिल्याबाई उनका
मालवा थी उनकी कर्मभूमि
तीन दशक तक शासन जिनका।

निर्धन, असहाय, गरीबों की
वे नई मसीहा बन छाई
सब ओर मदद का हाथ बढ़ा
सुख, शांति, समृद्धि लेकर आईं।

मालवा राज्य के बाहर भी
बावड़ी और कूप बनाए
जन–कल्याण का लक्ष्य लिए
सर्वत्र नए निर्माण कराए।

इन्दौर ग्राम से नगर बना
उनका प्रयास था रंग लाया
अब महानगर बन उभर रहा
मौजूद वहाँ उनकी छाया।

– अहमदाबाद (गुजरात)

फास्ट फूड
चित्रकथा : देवांशु वत्स
एक दिन...
हाय!
क्या हुआ मोंटी?
पेट में दर्द राम!
देखा ज्यादा फास्ट-फूड खाने से यही होता है!
वैसे मेरे चाचाजी केमिस्ट हैं। मैं अभी आया...
फिर तुरंत ही...
यह गोली खा लो! कुछ देर में ठीक हो जाएगा!
थोड़ी देर बाद...
वाह! मैं ठीक हो गया। मुझे और गोलियां दे दो राम!
हां, यह लो!
दूसरे दिन फिर..
राम, फिर पेट दर्द!
मोंटी, पेट दर्द वाली गोली क्यों नहीं खा लेते!
वो तो मैंने फास्ट फूड खाने से पहले खा ली थी!
ये क्या किया मोंटी तुमने?
तुमने बिना दर्द हुए ही दवा ले ली! एडवांस में दवा खाने से बीमारी बढ़ जाती है! जल्दी से डॉक्टर चाचाजी के पास जाओ!
हाय!

संबंधों की ऊष्मा

– महेश केशरी

नववर्ष का धूम–धड़ाका अभी चल ही रहा था। आशीष, एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता था। बहुत दिनों के बाद वह अपने घर लौटा था। लेकिन, आशीष खुश नहीं था। भला, ऐसा कहीं होता है। कि नया वर्ष हो और, कोई प्रसन्न ना हो। लोग, नये वर्ष में कही आने–जाने और घूमने–फिरने की बात करते हैं। नई–नई योजनायें बनाते हैं।

लेकिन, आशीष, रामदीन काका के स्वास्थ्य को लेकर बहुत चिंतित था। रामदीन काका से उसका बहुत ही आत्मीय संबंध था। वो, उसके घर के सबसे पुराने नौकरों में से एक थे। उसके दादा जी के समय के। नौकर कहना बहुत ही गलत होगा। दरअसल उसके दादा जी के मुँहलग्गू थे। दादा जी को उनसे विशेष प्रेम था। इस कारण आशीष के पिता जी, चाचा जी और माँ उनका बहुत सम्मान करते थे।

बुढ़ापा बहुत ही खराब चीज होता है। रामदीन काका जब तक स्वस्थ्य रहें। उसके घरवालों की सेवा करते रहे। लेकिन, अब वे जीर्ण–शीर्ण हो चुके थे। एक तो बुढ़ापा। उसके बाद इधर वो अक्सर बीमार भी रहने लगे थे। बचपन में एक बार जब आशीष छः–सात वर्ष का था। और खूब बीमार पड़ा था। तो उस समय आज की तरह कहीं आने जाने के लिये सुविधा नहीं होती थी। पहले वे लोग गाँव में रहते थे। तब रामदीन काका ने करीब तीन कोस दूर अपने कँधे पर टाँगकर आशीष को वैद्य जी के पास दिखाने लेकर गये थे।

सप्ताह भर तक रामदीन काका उसके ठीक होने तक उसके सिरहाने ही बैठे रहे। जड़ी–बूटी की दवाई सिलबट्टे पर कूटकर खिलाते रहे। तब जाकर वो कहीं ठीक हुआ था।

आशीष का कमरा, घर के आखिर में सर्वेंट क्वार्टर के ठीक बगल में ही था। उस रात सब लोग अलसाये से अपने–अपने बिस्तर में घुसे हुए गहरी नींद में सो, रहे थे। तभी, आशीष के कानों में रामदीन काका के कराहने की आवाज सुनाई पड़ी थी। चारों तरफ घुप्प अँधेरे का साम्राज्य था। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। दाँत किटकिटाने वाली ठंड पड़ रही थी। आशीष ने टॉर्च निकाला और सर्वेंट क्वार्टर की तरफ भागा। रामदीन काक ठंड से काँप रहे थे। आशीष ने रामदीन काका से पूछा– ''काका! आपको कैसा लग रहा है। ?''

रामदीन काका ठंड से काँपते हुए बोले– ''बेटा! बहुत जूड़ी आ रही है। बदन दर्द से टूट रहा है।''

आशीष, फिर से अपने कमरे की ओर, भागा और रजाई निकालकर, सर्वेंट क्वार्टर की तरफ दौड़ा। रजाई में रामदीन काका को लपेटकर डॉक्टर को दिखाने चल पड़ा। संयोग से उस रात डॉक्टर अग्रवाल अभी जाग ही रहे थे।

डॉक्टर अग्रवाल उसके परिचित और पारिवारिक चिकित्सक थे। रामदीन काका को तुरंत अपने औषधालय में भर्ती कर लिया। रातभर आशीष जागता रहा। डॉक्टर अग्रवाल के प्रयास और आशीष की सूझ-बूझ से सुबह तक रामदीन काका काफी अच्छा अनुभव करने लगे थे।

सुबह जब आँख खुली तो वे, आशीष की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए बोले- ''बेटा! अगर तुमने रात को मेरे जैसे गरीब और लाचार पर दया न की होती। और डॉक्टर अग्रवाल के यहाँ नहीं लाये होते। तो मैं बचता नहीं! तुम्हारा ये उपकार मैं आजीवन नहीं भूलूँगा।''

आशीष ने रामदीन काका के हाथों को अपने हाथ में लेते हुए कहा- ''उपकार कैसा काका? आपको तो याद ही होगा। जब मैं बहुत छोटा था। और, ऐसे ही एक बार बीमार पड़ा था। तो आप मुझे ऐसे ही एक ठंड भरी रात में उठाकर वैद्य जी के पास ले गये थे। उस दिन आपने भी तो मेरी सहायता की थी।''

रामदीन काका के ठंडे हाथों का आशीष ने अपने हाथों में लेते हुए कहा।

सचमुच इन हाथों से रामदीन काका को एक ऊष्मा सी मिल रही थी। इस मानवीय स्पर्श और ऊष्मा को पाकर रामदीन काका, सचमुच में ही अपनी बीमारी भूल से गये थे। आशीष को, इससे बड़ी खुशी भला और क्या मिल सकती थी।

- बोकारो (झारखंड)

वर्ग पहेली

- राजेश गुजर

वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत ग्रंथ के २७ पात्रों के नाम इस वर्ग पहेली में छिपे हैं, ये नाम उल्टे-सीधे, आड़े-तिरछे हैं। (एक अक्षर का उपयोग अधिक बार भी हुआ है।)

उत्तर- १) भीम, २) भीष्म, ३) द्रौपदी, ४) कृपाचार्य, ५) सहदेव, ६) संजय, ७) द्रोणाचार्य, ८) अर्जुन, ९) श्रीकृष्ण, १०) एकलव्य, ११) धृतराष्ट्र, १२) अश्वत्थामा, १३) गांधारी, १४) राधा, १५) युधिष्ठिर, १६) बलराम, १७) माद्री, १८) कर्ण, १९) नकुल, २०) अभिमन्यु, २१) सुभद्रा, २२) अम्बा, २३) कुंती, २४) सत्यवती, २५), शकुनि, २६) पाण्डू, २७) घटोतकच्छ।

भी	म	द्रो	प	दी	य	ज	सं	ब
श्री	ष्म	णा	व	दे	ह	स	अ	ल
कृ	पा	चा	र्य	न	र्जु	अ	श्व	रा
ष्ण	ण्डू	र्च	धृ	रू	अं	बा	त्था	म
ए	क	ल	व्य	त	क्म	द्री	मा	च
गां	र्णी	यु	न्यु	द्रा	रा	णी		टो
रा	धा	नि	धि	म	भ	ष्ट्र	ल	त
कुं		री	कु	ष्ठि	भि	सु	कु	क
ती	व	त्य	स	श	र	अ	न	च्छ

सर्पों का रमणीय द्वीप में भ्रमण

– मोहनलाल जोशी

एक बार कद्रु ने विनता से कहा– ''तुम मेरी दासी हो गई हो। मुझे तथा मेरे बच्चों को रमणीय द्वीप देखना है। अपने बेटे गरुड़ से कहो। हमको घुमाकर लावे।''

गरुड़ का शरीर भीमकाय था। उसके पंख बहुत बड़े थे। उसका तेज सूर्य से भी अधिक था। उसने कद्रु, विनता और सर्पों को अपनी पीठ पर बिठाया। वह तेज गति से उड़ने लगा। उड़ते–उड़ते वह सूर्य भगवान के पास चला गया। सभी सर्प गर्मी से जलने लगे। वे पीड़ा से रोने चिल्लाने लगे।

तब कद्रु ने इन्द्रदेव की आरती की। इन्द्र ने प्रसन्न होकर बरसात कर दी। सर्प पानी की ठंडक से प्रसन्न हो गये। गरुड़ सभी को लेकर रमणीय द्वीप पहुँच गया। वहाँ पर वे आनन्द मनाने लगे।

गरुड़ का इन्द्र से अमृत लाना

एक बार गरुड़ ने माता विनता से पूछा– ''हमें कद्रु मासी और उनके सर्प पुत्रों की सेवा क्यों करनी पड़ती है?''

गरुड़ की माँ विनता ने कहा– ''मैं कद्रु की दासी हूँ।'' तब सर्पों ने कहा– ''गरुड़ भैया! तुम हमें अमृत लाकर दो। हम तुम्हारी माता को दासी से मुक्त कर देंगे।''

गरुड़ इन्द्र के पास अमृत लेने गया। मार्ग में एक निषादों का देश था। गरुड़ उनका निवारण किया। वहाँ से गरुड़ एक सरोवर पर गया। वहाँ पर सैकड़ों योजन बड़ा हाथी और मगरमच्छ था। गरुड़ ने दोनों को खाकर अपनी भूख मिटाई।

फिर गरुड़ इन्द्र के पास पहुँचा। उसका इन्द्र से भीषण युद्ध हुआ। इन्द्र ने वज्र का प्रहार किया। गरुड़ उससे भी नहीं रुका। वह अमृत लेकर आ गया। इन्द्र ने गरुड़ को ताकतवर जानकर उससे मित्रता कर ली। विनता माता दासी नहीं र ही। वह मुक्त हो गई।

– बाड़मेर (राजस्थान)

भोला
चित्रकथा-
भोला सचमुच बहुत भोला था. एक बार वह अपने मालिक के काम से जंगल के रास्ते दूसरे गांव जा रहा था.
ओह! थक गया..
तभी-
अबे! जो कुछ भी है निकाल दे..
..वरना मैं तुझे गोली से उड़ा दूंगा..
सच में?
..उड़ा दो भइया, उड़ा दो..
देखो न..मैं भी दो मील से अकेले पैदल चलते-चलते बोर हो गया हूं...
कैसा मूर्ख है..

रेलों में एयर ब्रेक प्रणाली

– रघुराज सिंह 'कर्मयोगी'

''बच्चो! आपने ब्रेकों का नाम तो सुना होगा।''

''जी हाँ गुरुजी! सुना है और देखा भी है। विद्यालय जाते समय जब हम साइकिल चला रहे होते हैं और कोई सामने आ जाता है तो साइकिल में ब्रेक लगाकर उसे सरलतापूर्वक नियंत्रित कर लेते हैं। हमें खरोच तक नहीं आती।''

''हाँ तो ठीक समझा आपने। मनुष्य पुरातन काल से ही किसी न किसी रूप में ब्रेकों का उपयोग करता चला रहा है। दौड़ते हुए घोड़े को लगाम से रोकना या ऊँटों, बैलों या अन्य जानवरों को नियंत्रित करना होता था तो ब्रेक जैसी युक्ति से जानवरों को नियंत्रित किया जाता था। समय आगे बढ़ा और मानव ने गति की उपयोगिता को समझा तो उस पर नियंत्रण करना आवश्यक समझा। इसलिए उसने ब्रेकों को अपनाया।

वृत्त का आविष्कार हुआ तो गति ने तीव्रता पकड़ी। वृत्त से प्राप्त गति और ब्रेकों के प्रयोग ने विश्व में क्रांति पैदा कर दी। औद्योगिक क्षेत्र में अद्भुत विकास संपन्न हुआ। यह विकास बादलों से उत्पन्न विद्युत गर्जना और उसकी चमक जैसे आच्छादित होगा। पहले पहल साइकिल ने मानव की यात्रा को सुगम बनाया। साइकिल में यांत्रिक ब्रेक डिजाइन किए तो ऑटोमोबाइल गाड़ियों में डिस्क ब्रेक, हाइड्रोलिक ब्रेक। अब शक्ति ब्रेक के रूप में एयर ब्रेक काम में लिए जा रहे हैं। एयर ब्रेक सिस्टम फुल सेफ यानि पूर्णत: सुरक्षित सिस्टम है। इसलिए वैज्ञानिकों ने इसे प्राथमिकता के आधार पर अपनाया। ब्रेकों की तकनीक इतनी आगे बढ़ गई है कि उसने एयर ब्रेकों को भी पीछे छोड़ दिया। बुलेट ट्रेनों को मेंगलेव चुंबकीय ब्रेकों द्वारा नियंत्रित किया जाने लगा।

प्रारंभिक काल में रेलगाड़ियों को रोकने के लिए निर्वात ब्रेक काम में लिए जाते थे। जो वर्ष १८७९ में अस्तित्व में आए। इंग्लैंड में पहली रेलगाड़ी २७ सितम्बर १८२५ में स्टॉकटन से डालिंगटन तक चली। यह रेलगाड़ी निर्वात सिस्टम के ब्रेकों से नियंत्रित होती थी। इस पद्धति में ट्रेन पाइप से हवा खींचकर निर्वात पैदा किया जाता था। इससे लिंक व्यवस्था सक्रिय हो जाने से ब्रेक लग जाते हैं। परन्तु यह सिस्टम कारगर सिद्ध नहीं हुआ। क्योंकि अंतिम वैगन या डिब्बे तक ब्रेक पावर केवल ७० प्रतिशत ही पहुँच पाता है। वर्ष १९८४ में रेलवे द्वारा बॉक्स एन टाइप के वैगन लाइन पर उतारे गए। इन वैगनों में विशेष प्रकार की डिजाइन के ब्रेक उपयोग में लिए गए। जिन्हें एयर ब्रेक के नाम से जाना जाता है।

एयर ब्रेकों का आविष्कार वर्ष १८७६ में हुआ था। ये बहुत ही प्रभावशाली ब्रेक हैं। यदि एयर ब्रेक युक्त रेलगाड़ी स्टेशन पर प्रवेश करती है, उस समय ब्रेक लगा दिया जाए तो वह प्लेटफॉर्म के स्टॉपेज तक आते–आते पूरी तरह ब्रेक लग जाते हैं। रास्ते में भी

अगर कहीं ट्रेन पार्टिंग हो जाती है तो गाड़ी के दोनों भागों के डिब्बों में ब्रेक अपने आप लग जाते हैं। जिससे डिब्बे रोल नहीं करते हैं और दुर्घटनाएँ होने की संभावनाएँ शून्य हो जाती है। एयर ब्रेक सिस्टम के ब्रेक बहुत प्रभावी तौर पर लगते हैं।

रेल उपभोक्ताओं के लिए हर्ष का विषय है कि एयर ब्रेक सिस्टम के कारण आजकल लोग हौल ट्रेनें जिनमें १०० वैगन तक होते हैं। उन्हें दुर्घटना रहित चलाना आसान हो गया है। माल का परिवहन समय पर अधिक आत्रा में उपभोक्ताओं को किया जाना संभव हुआ। इन लोंग हौल ट्रेनों को नियंत्रित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल्ड न्यूमेटिक ब्रेक सिस्टम लगाया गया है जो कि एयर ब्रेक सिस्टम का ही परिष्कृत रूप है। इसी क्रम में भारतीय रेलवे के द्वारा सुपर वासुकी लोंग हौल ट्रेन भारत की सबसे लंबी ट्रेन है। जिसकी लंबाई ३.५ किलोमीटर थी। उस भरी हुई रेलगाड़ी में छः लोको इंजन लगाए गए। २९५ वैगनों में २५,९५२ टन वजन लेकर यह गाड़ी ट्रैक पर दौड़ाई गई। यह सफलतापूर्वक अपने गंतव्य तक पहुँची जो कि एक रिकॉर्ड है और भारतीय इंजीनियरों एवं कर्मचारियों का कमाल भी।

एयर ब्रेक प्रणाली का आविष्कार वर्ष १८६७ में इंग्लैंड के महान वैज्ञानिक जॉर्ज वेस्टिंग हाउस ने किया था। इस सिस्टम में इंजन में स्थापित कंप्रेसर के द्वारा ट्रेन पाइप में ६ किलो/सेंमी. स्क्वायर के दबाव पर हवा फीड की जाती है। लगातार एवं धीरे-धीरे ब्रेक लगने के कारण यूरोप, उत्तर अमेरिका, मध्य पूर्व एशिया, इंग्लैंड, जर्मन, भारत आदि देशों ने इस पद्धति को अपनाया है जो कि कारगर सिद्ध हो रही है। बच्चो! वर्ष १९६० में जॉर्ज वेस्टिंगहाउस ने एयर ब्रेक पद्धति में सुधार किया। उसने 'के' टाइप एयर ब्रेक प्रणाली का निर्माण किया। इसमें ८५ प्रतिशत वैगनों को नियंत्रित किया जाने लगा। परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के समय इस पद्धति में पुनः सुधार किया गया और ट्रेन के सभी वैगनों पर ड्राइवर का १०० प्रतिशत नियंत्रण संभव हुआ।

साथ ही पहले ब्रेक ब्लॉक, कास्ट आइरन के बनाकर फिट किए जाते थे। लेकिन ये अब फाइबर के बनाए जाने लगे हैं। जिससे गाड़ी खाली वैगन का भार भी कम हुआ। पहिए कम घिसते हैं। ब्रेड ब्लॉक की आयु अधिक हो जाती है। रखरखाव पर पैसा भी कम खर्च होता है। आज कल एयर ब्रेक प्रणाली को सभी गाड़ियों में अपनाया जाने लगा है। वह चाहे माल गाड़ियाँ हों या सवारी गाड़ियाँ, जन शताब्दी, राजधानी एक्सप्रेस, वंदे भारत, लोकल ट्रेन या फिर यात्री गाड़ियाँ। इन सब में एयर ब्रेक प्रणाली अपनाने से प्रभावी ब्रेक व्यवस्था लागू है। जिससे दुर्घटनाओं की संभावना समाप्त-सी हो गई है।

तो है ना बच्चो! एयर ब्रेक सिस्टम बहुत अच्छा। जो निश्चित रूप से देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इससे रेलवे को उपभोक्ताओं की सराहना भी मिली है और उसकी छवि में निश्चित रूप से बढ़ोतरी हुई है।

- कोटा जंक्शन (राजस्थान)

बच्चो ! नाम बताओ ?

– रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

(१)

बचपन से ही जिनके मन में,
क्रान्ति जन्म लेती है।
आदेशित कुछ करने को ज्यों,
भारत माँ करती है।।
खेतों में बन्दूकें बोते,
चट से बोल पड़े थे।
अँग्रेजों ने फाँसी दी तो,
हँसते हुए चढ़े थे।।

(२)

लोहा लेना अँग्रेजों से,
बिना हिचक स्वीकारा।
झाँसी की रक्षा में जिसको,
जीवन लगा न प्यारा।।
वीर वेष धारण कर निकली,
कौन रही वह रानी ?
जिसकी अंतिम रक्त बूँद ने,
हार न मन में मानी।।

(३)

वेष संत का भ्रमण निरंतर,
सहज–सरल उपकारी।
निर्धन नारायण की पूजा,
ऐसे अतुल पुजारी।।
गाँधीजी का साथ निभाया,
गुणी और भूदानी।
उनका नाम बताओ बच्चों,
जाने तुमको ज्ञानी।।

(४)

हाथ न आये अँग्रेजों के,
मरे निजी गोली से।
सिंहनाद–सा गर्जन उनका,
लोग डरे बोली से।।
कौन बहादुर देश भक्त वह,
समय जिन्हें देता था दाद।
आजादी के लिए लड़े पर,
खुद तो थे पूरे आजाद।।

(५)

भले घास की रोटी खायी,
हार नहीं स्वीकारी।
बहुत अधिक अपने प्राणों से,
मातृभूमि थी प्यारी।।
राणा–कुल को किया उजागर,
वीरोचित हर काम।
याद किया जाता है जिनके,
घोड़े का भी नाम।।

(६)

राज घराने में रहकर के,
काम धाय का करती।
खाया नमक अदा करने से,
किंचित मात्र न डरती।।
निज सुत को बलिदान कर दिया,
उसकी गाथा गाओ।
अमर हुई जो, ऐसी माँ का,
बच्चो ! नाम बताओ।।

– हरदोई (उ. प्र.)

उत्तर– १) सरदार भगतसिंह, २) रानी लक्ष्मीबाई, ३) संत विनोबा भावे, ४) चन्द्रशेखर आजाद, ५) महाराणा प्रताप, ६) पन्ना धाय।

राजू और गुलाब परी

– डॉ. शील कौशिक

राजू पाँचवी कक्षा में पढ़ता था। बुद्धिमान होते हुए भी वह बस उत्तीर्णांक से ही अगली कक्षा में प्रवेश पाता था। उसके दोस्त उसे खेल के कालखंड में खेलने को कहते तो वह कक्षा में ही बैठा रहता था। कक्षा में कितनी ही बार उसे कक्षा शिक्षक से डाँट पड़ती थी। उसकी शर्ट बाहर निकल जाती तो वह वैसे ही निकली रहती। जूते के फीते खुल जाते तो वह उन्हें बाँधता नहीं था। यहाँ तक कि कॉपी–किताबें बस्ते में डालने में भी उसे आलस आता था। उसकी इस आदत और आलसी स्वभाव के कारण अक्सर वह अपनी कापियाँ और पुस्तकें बेंच पर ही छोड़ जाता था। जिसके उसे घर में बहुत डाँट पड़ती थी।

एक दिन उसकी माँ ने उसे जिद करके बगीचे में खेलने भेज दिया। बाकी बच्चे फुटबॉल खेलने में व्यस्त थे, लेकिन वह बगीचे में बैंच पर बैठा रहा। वहाँ बैठा–बैठा देखता रहता या फिर ऊँघता रहा। उसने देखा एक पेड़ पर चिड़िया कितनी तन्मयता से घोंसला बना रही है। उसने चारों ओर नजर उठाकर देखा। पेड़ के पत्ते भोजन बना रहे थे.. सूरज अपनी चमक बिखेर रहा था... माली काका पौधों की निराई–गुड़ाई में व्यस्त थे। सभी अपने–अपने कार्यों में व्यस्त थे, कोई भी उसकी तरह बेकार में नहीं बैठा था। ''मुझे क्या? मुझे तो भगवान ने आराम करने के लिए भेजा है।'' कहकर उसने अपने कंधे झटक दिए।

एक दिन राजू गहरी नींद में सोया था। सपने में उसने देखा कि वह सदा की भाँति बगीचे में बेंच पर बैठा ऊँघ रहा था। तभी एक सुंदर गुलाब परी आई और वह बहुत सारे गुलाब के पौधों के बीच छुपने का प्रयास कर रही थी। वह डरी हुई थी। एक दुष्ट परी उसका पीछा, कर रही थी। दुष्ट परी उसे न ढूँढ़ सकी और कुछ समय बाद वापस लौट गई। किन्तु जैसे ही गुलाब परी वहाँ से निकलकर जाने लगी तो उसके कपड़े काँटों में बुरी तरह उलझ गए। उसने सहायता के लिए पुकारा। राजू ने इधर–उधर देखा। उसने सुन रखा था कि परियाँ खुश होकर बहुत सारे उपहार देती हैं, वे कुछ भी कर सकती हैं। यह सोचकर वह परी की सहायता करने के लिए दौड़ा। उसने सावधानी से परी को काँटों से मुक्त कर दिया। परी बहुत प्रसन्न हुई। ''तुम्हारा क्या नाम है?''

''मेरा नाम राजू है।''

''तुम बहुत अच्छे हो। लो मैं तुम्हें यह छड़ी उपहार में देती हूँ। तुम इसे एक दिन के लिए अपने पास रख सकते हो। कल इसी समय आकर मैं यह छड़ी वापस ले लूँगी। इस छड़ी को घुमाते ही, तुम जो भी माँगोगे या आज्ञा दोगे, यह तुरंत पूरा कर देगी। छड़ी लेकर राजू बहुत खुश हुआ। छड़ी न हुई जैसे उसे बहुत बड़ा खजाना मिल गया हो।

आलसी राजू ने छड़ी को ले जाकर कमरे में अपने बिस्तर के सिरहाने रख दिया और सो गया। उसने सोचा अभी पूरा दिन पड़ा है, छड़ी को संभाल कर रख देता हूँ। शाला से वापस लौटने पर इससे कुछ माँग लूँगा। जब वह शाला से लौटा तो खाना–खाकर सीधा बिस्तर पर पसर गया। उसे सामने छड़ी दिखाई दी। वह सोचने लगा मुझसे कोई काम नहीं होता है, क्यों न छड़ी को आदेश देकर अपना अगला–पिछला गृह–कार्य पूरा करवा लूँ। आज भी बहुत सारा गृह–कार्य दिया है, पर अभी थोड़ी देर सो लेता हूँ। जब वह उठा तो शाम हो गई थी। माँ ने उसे खेलने जाने के लिए कहा। उसका ध्यान तो छड़ी में अटका था। वह माँ को छड़ी के बारे में बताना नहीं चाहता था। इसलिए माँ के कहने पर चुपचाप बगीचे में खेलने चला गया और छड़ी को साथ ले गया। उसने सोचा वहाँ बैठ कर छड़ी से जीभर सौगात माँग लूँगा। किन्तु हमेशा की तरह वह वहाँ बेंच पर आलस में बैठा रहा और बैठे–बैठे सो गया। कुछ देर बाद उसकी आँख खुली तो उसने गुलाब परी को अपने सामने पाया।

''राजू! मेरी छड़ी वापस कर दो।''

''अभी नहीं, परी रानी! मैंने तो छड़ी से कुछ माँगा ही नहीं....।'' ''तो इसमें मेरा क्या दोष? मैंने तो तुम्हें सचेत किया था कि मैं तुमसे एक दिन बाद छड़ी वापस ले लूँगी, मैं विवश हूँ।''

परी ने राजू की एक न सुनी और अपनी छड़ी वापस लेकर चल दी। अब राजू बहुत पछता रहा था। वह जोर–जोर से पुकारने लगा, ''गुलाब परी! रुक जाओ.... कृपया रुक जाओ... तभी उसकी नींद खुल गई। उसने इधर–उधर झाँका।

''अच्छा, तो यह सपना था।''

सपने में उसके आलसी स्वभाव ने सचमुच ही उससे एक सुनहरा अवसर छीन लिया। राजू को सीख मिल चुकी थी। उसने प्रण किया कि आगे से वह आलस नहीं करेगा और अभी का काम, फिर पर नहीं टालेगा।

– सिरसा (हरियाणा)

अतुल्य साहसी : श्री भूरेलाल

म. प्र. के गुना जिले के आसपास का पूरा क्षेत्र उन दिनों कुख्यात डाकू नाहरसिंह के भय से काँपता था। पुलिस बल को भी उसके गिरोह से मुठभेड़ काफी महँगी पड़ती थी।

वह १४–१५ जुलाई की बरसाती रात जब २० मार्च १९३८ के इसी जिले के बजरंग गढ़ गाँव में जन्मे श्री भूरेलाल जो २० जून १९६५ को म. प्र. पुलिस में भरती हुए और ५ वर्षों से पुलिस सेवा में थे। उन्हें यह जानकारी लगी कि गिड खो में नाहर सिंह छुपा है। भूरेलाल स्वयं यह खबर पक्की जाँचने बन्दूक लिए अँधेरे जंगल में धँस गए। वे डाकू दल के एकदम पास पहुँच चुके थे कि डाकू चौकन्ने हो गए। नाहरसिंह ने गोली चला दी स्फूर्ति के पुतले बने श्री भूरेलाल बचते बचाते पलटवार करने लगे।

एक भागते डाकू को धर दबोचा तब तक पुलिस दल भी जा पहुँचा। नाहरसिंह का खात्मा हुआ डाकू पकड़े गए। देश ने इन साहसी वीर भूरेलाल को अशोक चक्र से सम्मानित किया।

पुस्तक परिचय

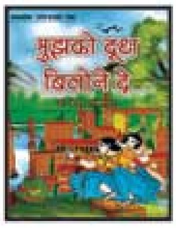

मुझको दूध बिलोने दे

मूल्य १९५/-

प्रकाशन-केशव बुक्स, एफ-७, गली नं. १ तृतीयतल पंचशील गार्डन एक्स. नवीन शाहदरा दिल्ली-३२

लोरी एवं प्रभातियों बाल साहित्य की बहुत पुरानी और प्रभावशाली विधाएँ हैं। लेखक पुरुष हो या महिला लेकिन उसका मन ममता एवं वात्सल्य भरा हो तभी यह रचना होती है। ४० लोरियों और ११ प्रभातियों की भाव एवं रस से भरी रचनाएँ प्रस्तुत करते हुए डॉ. मेजर शक्तिराज ने इसमें अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा प्रकट की है।

नटखट बाल कहानियाँ

मूल्य ४५०/-

प्रकाशन- अनुराग प्रकाशन, ४७६०-६१, २३ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' बाल साहित्य में दशकों से अपने विशिष्ट लेखन से प्रसिद्ध है। विपुल सृजन के धनी श्री संजय जी की इस नई बाल कहानी की पुस्तक में २८ बाल कहानियाँ है। मस्ती, मनोरंजन, शिक्षा, संस्कार, उद्देश्य पूर्णता सभी एक साथ हैं इन कहानियों में।

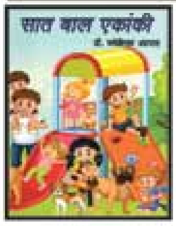

सात बाल एकांकी

मूल्य ३००/-

प्रकाशक-सूर्य भारती प्रकाशन २५९६, नई सड़क दिल्ली-०६

बाल साहित्य की विविध विधाओं में प्रचुर साहित्य से वर्षों से बच्चों के लिए साहित्य का खजाना भरने में साधनारत डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल इस बार आपके लिए लाए हैं, सरल मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद बाल एकांकी। जिन्हें आप अपने विद्यालय में मंचित भी कर सकते हैं।

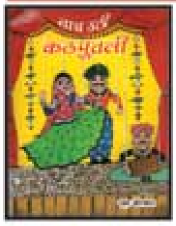

नाच उठी कठपुतली

मूल्य १५०/-

प्रकाशक-बोधि प्रकाशन, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया एक्स. नाला रोड, २२ गोदाम जयपुर-०६

सौ. पद्मा चौगाँवकर छः दशकों से निरंतर बाल साहित्य सृजन में सफलतापूर्वक जुटी हैं। शिल्प, विषय वस्तु और प्रस्तुतिकरण में सर्वथा नवीन एवं समसामयिक सन्दर्भों से जोड़ती ये ११ बाल कहानियाँ सचमुच आपके लिए अमूल्य भेंट हैं पद्मा जी की।

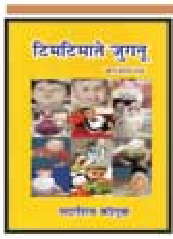

टिमटिमाते जुगनू

मूल्य १००/-

प्रकाशक-श्री विनायक प्रकाशन ३१८९/ई, सुदामानगर, गोपुर चौराहा, बैंक ऑफ इण्डिया के पास, इन्दौर-९ (म. प्र.)

वरिष्ठ साहित्यकार सदाशिव 'कौतुक' की इस पुस्तक में बच्चों के लिए १८ कविताएँ एवं ५ कहानियाँ है। सरल, सादगी पूर्ण, बोध युक्त रचना कौतुक जी के लेखन की विशेषता है।

आइसक्रीम

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

विद्यालय के निकट खड़ा था
आइक्रीम का ठेला।
छुट्टी होते ही बच्चों का
लगा बड़ा–सा मेला।।

आइसक्रीम खरीदा बढ़कर,
खाया लेकर चुस्की।
चूस रहे कुछ जल्दी–जल्दी,
मार रहे कुछ मुस्की।।

मन्नू ने समझाया रवि को,
बात ध्यान दो यार।
आइसक्रीम धूप–गर्मी में,
कर सकती बीमार।।

सर्दी में आइसक्रीम खाना,
बहुत फायदेमंद।
होती दूर खराश गले की,
मिलता है आनंद।।

आइसक्रीम को जल्दी–जल्दी,
कभी नहीं तुम खाना।
हो सकता सिरदर्द भयंकर,
'ब्रेन फ्रीज' से स्वयं बचाना।।

ज्यादा आइसक्रीम खाना,
बहुत बुरी लत होती।
दाँतों को नुकसान पहुँचता,
चुस्ती–फुर्ती खोती।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

रवि लायद का विस्मयकारी भारत

उत्तराखण्ड राज्य में स्थित चमोली जिले के गांव माणा की, चीन की सीमा से सटी हुई जो आख़िरी दूकान है उसका नाम ही है 'हिन्दुस्तान की आख़िरी दूकान' और बस इस दूकान के बाद अपने देश की सीमा समाप्त हो जाती है ।

25 वर्ष पहले चंदेल सिंह बड़वाल नामक व्यक्ति द्वारा खोली गयी यह दूकान अपने नाम और सीमा पर स्थिति की वजह से पूरे देश में मशहूर हो गयी है ।

धौलपुर (राज.) की अचलगढ़ पहाड़ियों पर वीराने में भोलेनाथ का एक मंदिर है जिसमें स्थापित शिवलिंग की एक अदभुत विशेषता है और वह है इसके दिनभर रंग बदलने की । वैज्ञानिक परीक्षणों से भी इस बात का अभी तक कोई परिणाम नहीं निकल पाया है कि इस शिवलिंग का रंग सबेरे लाल, दोपहर को केसरिया और सांझ होते-होते श्याम वर्ण में कैसे बदलता रहता है ।

राजेश खन्ना ने वर्ष 1969 से 1971 तक लगातार 15 सुपरहिट फिल्में दी थीं जो एक रिकॉर्ड है और जिसे अमिताभ बच्चन भी नहीं तोड़ पाये हैं ।

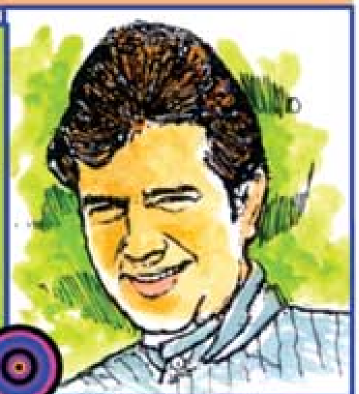

बेंगलुरु की शकुंतला देवी को सन 1982 में गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा 'ह्यूमन कैलक्यूलेटर' उस समय घोषित किया गया था जब 13 - 13 अंकों की दो संख्याओं का उन्होंने मात्र 28 सेकेंड में बिलकुल सही गुणनफल बता दिया था ।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२३ प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२३ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना